भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 31 अंक : 4	30.7.2008 बुधवार (जुलाई – अगस्त)	प्रति अंक : 10.00

त्रिवेणी संगम में अर्पण करें प्रार्थना के पुष्प!

गुरुपूर्णिमा – शिष्यों के जीवन का महामंगलकारी दिन – आषाढ़ी पूर्णिमा **१८ जुलाई, शुक्रवार** को दिल्ली में प.पू. गुरुजी की निश्रा में उत्तर भारत के सभी मुक्तों ने मनाई। किसी भी क्षेत्र में विशेष रूप से पारंगत होने के लिए 'गुरु' का होना अनिवार्य है। राम-कृष्णादि अवतारों ने भी समग्र मानवजाति के लिए आदर्श रखने अपने गुरुओं की आज्ञानुसार आचरण किया। यहाँ तक कि भारतवर्ष में पहले बड़े-बड़े राजा तक **'राजगुरु'** को ही आगे रख कर सारा राज कारोबार करते।

अध्यात्म में तो इसका महत्व बहुत ही विशेष है। स्वामिनारायण संप्रदाय के अनुयायी भी इस बात से वाकिफ हैं कि स्वयं पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण ने नीलकंठ वर्णी के रूप में पूरा भारत भ्रमण करने के पश्चात् श्री रामानंदस्वामी को गुरु मान कर उनसे दीक्षा प्राप्त करी थी। **भगवान अखंड रखे प्रगट गुरु** ही जीव को मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर कर सकते हैं। उनमें श्रद्धा रख कर शिष्य अपने मोक्ष के लिए उनका दृढ़ आश्रय पकड़े रखता है। नदी-तालाब तैरा जा सकता है, पर समुन्दर को हम खुद नहीं तैर सकते; नाव में – स्टीमर में बैठ कर ही लांघ सकते हैं। **गुणातीतभाव में अखंड रहते संत ऐसी नाव-स्टीमर के समान हैं।** दान, व्रत, तपस्या, निःस्वार्थ सेवा, मूर्तिपूजा से संस्कार पड़ते हैं, जबकि – **'प्रगट मोक्षदाता गुरु'** हमारी अहंता-ममता व स्वभाव एवं मूल वृत्ति पर चोट लगा कर-छुड़वा कर हमें साफ-सुथरा करके मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर करता है। अपने आप करे गए साधन-व्रत, तपस्या, दान कई बार बंधनकारी भी बन सकते हैं, पर ऐसे गुरु की आज्ञा से किया गया प्रत्येक कार्य 'सत्कर्म' बनता है-जो हमारे प्रारब्ध व प्रकृति को बदलता है।

ऐसे गुरु को 'स्व' की कोई कॉन्सियसनेस नहीं होती; **वे सिर्फ भगवान से 'स्वामीसेवक भाव' रख कर उनकी उपासना करते हैं। कोई उनको सम्मान ना दे, तो भी वे प्रभु की मूर्ति में मगन रहते हैं। सामान्य कक्षा का जीव ऐसे नहीं रह पाएगा। अरे! मुक्तदशा को पाए हुए भी क्षोभ को तो पा जाएंगे।** यूं मोक्षदाता गुरु इनसे भी परे

हैं – अक्षरब्रह्म के साधर्म्य को पाए हुए हैं और...'वे भगवान तुल्य हैं' – ऐसा सभी के भीतर का साक्षी कबूल करता है।

ऐसे सच्चे 'गुरु' अपने आश्रित के गुण-अवगुण, गुनाह की ओर देखते ही नहीं। बल्कि उसके भीतर के आसुरी तत्त्वों को मूल से उखाड़ कर उसे 'भगवान की मूर्ति' जब तक नहीं देते, तब तक वे चैन से बैठते नहीं हैं। शिष्य के रोम-रोम से अहंता-ममता छुड़ा करके उसमें दिव्यता प्रगटा कर उसका **'ब्रह्ममय तनु'** बना देते हैं।

हम भाग्यशाली इसलिए हैं कि ऐसे अजोड़, असाधारण, विरल **'मोक्षदाता गुरु'** हमें मौज में मिल गए हैं। वे कौन ? अनादि गुरु **मू**ल **अ**क्षर**मू**र्ति गुणातीतानंदस्वामी और उनके द्वारा प्रज्ज्वलित अक्षुण्ण परंपरा से **अ**नादि **म**हा**मु**क्त भगतजी महाराज, अ.म.मु.जागास्वामी, अ.म.मु. अदाश्री, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज एवं प्रगट गुरुहरि हरिप्रसादस्वामिजी, भगवत्स्वरूप अक्षरविहारीस्वामिजी, भगवत्स्वरूप साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई जैसी प्रगट विभूतियाँ!

जीव की अपनी कोई ताकत नहीं कि अपनी मान्यताएं, ग्रंथियाँ, मेरा-तेरा व अनेक प्रकार की उर्मियाँ गुरु के चरणों में अहोहोभाव से समर्पित कर पाए।

इस हेतु **श्रीजी महाराज** ने आसान रास्ता बता दिया कि भगवान के ऐसे अखंडधारक संत की प्रसन्नता को पाए हुए मुक्त – जो कि निर्गुण हैं... उनसे 'मैत्री' कर लेंगे, तो हम संत को तत्त्व से पहचान पाएंगे। फलस्वरूप...उनके दिव्य कल्याणकारी गुण सहज ही प्राप्त कर सकेंगे।

गुरुहरि योगीजी महाराज इसी बात को और तरीके से बताते कि – ***'तुम्हें जो मिले हैं, उन गुरु में निर्दोषभाव रखोगे, तो भवसागर से उबर पाओगे और... गुरु के प्रति दिव्यभाव रहे वही सच्चा 'गुरुपूजन' है। ऐसा पूजन सतत् करेंगे तो गुरु के गुण हम में आएंगे – हम सिद्ध हो जाएंगे।'***

प.पू. काकाजी ने तो **'गुणातीत ज्ञान'** का एक **रहस्य** यह भी खोल दिया कि –

यदि दिल की सच्चाई से **'सर्वदेशीयता'** के सिद्धांत को अपना कर कोई चले, तो ही वह सर्वोपरि स्थिति प्राप्त कर सकता है। **सर्वदेशीयता में जाए बिना 'एकांतिकभाव' सिद्ध हो ही नहीं सकता!** यह सच है कि अनन्यभाव से एक ही गुरु का सेवन हो सकता है। परंतु, महाराज अखंड रखे हुए अन्य गुणातीत स्वरूपों के प्रति भी ऐसा ही पूज्यभाव हो- उनका माहात्म्य हो-उनके प्रति रंचमात्र भी भावफेर नहीं होना चाहिए। भगतजी महाराज के प्रति अनन्यभाव होते हुए भी, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज ने श्री कृष्णजी अदा की आज्ञा से 'वड़ताल' संस्था को छोड़ कर हमें यही तो ज्ञान दिया कि – ***गुणातीतभाव को पाए चिदाकाश रूप सभी संत महाराज के ही स्वरूप हैं।***

सो, गुणातीत पुरुष जो सर्वदेशीयता के सिद्धांत को लेकर सतयुग प्रवर्ताना चाहते हैं, उसमें हम दिल की सच्चाई से जुड़ जाएं...

खूब गहराई से सोचें – तो हमें कैसे अनोखे गुरु केवल कृपा में मिल गए, जो खुद निर्बंध होते हुए भी हमारी कक्षा पर आकर हम में ओत-प्रोत हुए। हम सब के साथ उन्होंने संबंध बांधा और हँसते-खेलते हमें जगत से, दोषों-स्वभावों से परे करते गए... संकल्प से हमारा जतन करते रहे... आपस-आपस में मुक्तों की महिमा समझाते हुए, जगत फीका करते गए... अंदर बैठ कर रूपांतर करते ही गए... प्रसंग ला-ला कर हमारे दोष का दर्शन तो कराया ही,

साथ-साथ टालने का बल भी वे ही देते गए! भीतर की माया पेट कूटती रही–पाँव पटकती रही, पर विजयी तो भीतर बैठे 'गुरु' ही बने!!

इसके बावजूद भी यदि कोई बाधा डालता है, तो वह है–हमारे **'मन का कुसंग'!** जैसे कि प.पू. गुरुजी अकसर यह बात करते हैं कि–***हमने अपने मन से यारी-दोस्ती करी है, सत्पुरुष से नहीं।*** तो अलग-अलग रूपों से सजे-धजे ऐसे 'मन' से छुटकारा पाने–इंद्रियों अंतःकरण से रक्षा करवाने किसी भी प्रकार की खींचातानी में पड़े बिना मुक्तों में आत्मीयता से रसबस होकर-ओतप्रोत होकर निरंतर पराभक्ति करते हुए **सच्ची गुरुपूर्णिमा** मनाने और **सच्चा रक्षाबंधन**-रक्षा कवच प्राप्त करने 'संकल्प' नहीं, भीतर की सच्चाई से क्यों ना 'प्रतिज्ञा' करें?

पहली सितंबर – ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के **प्रागट्य पर्व** के उपलक्ष्य में वर्षों पूर्व उन्हीं के द्वारा की गई निम्न आशिषवर्षा के मर्म को समझ कर हमारे लिए उठाई उनकी ज़हमत का ऋण अदा करते हुए–

प्रभु हैं प्रगट तो सीखें हम,
करामात प्रत्यक्ष करने की,
लय और लीन होकर तुझ में ही,
क्रियाएं करें सभी जीवन की....

वचनामृत गढड़ा मध्य १३ में **महाराज ने कहा –**

'(प्रगट प्रभु के) संबंध वालों को मैं अक्षरधाम के देख रहा हूँ।' महाराज वह देखते थे और जानते थे। **उन्हें (वे सभी) प्रगति करते चैतन्य ही दिखाई देते थे। उन सभी के लिए कर्म का कायदा नहीं हो सकता; लेकिन जब तक कर्म की धुलाई चल रही होती है, तब तक सुख नहीं आता।** सो माना नहीं जाता कि हमारे प्रारब्ध धोने के लिए महाराज खेल रहे हैं। इसलिए **महाराज को समझाना पड़ा** कि–**तुम मुझे भगवान मानते हो, लेकिन तुम्हारे प्रारब्ध को (खेल खेल में) मिटा सकता हूँ, यह आप मानते नहीं हो।** वर्ना तो कैफ़–मस्ती आ जाए कि अहो हो! ऐसे समर्थ के हाथ में हम आ गए हैं!

प्रत्यक्ष भगवान मिलने पर 'संचित कर्म' उड़ जाते हैं। लेकिन हमारे जन्म से लेकर प्रत्यक्ष प्रभु मिले तब तक के किए गए कर्मों को 'प्रारब्ध' कहते हैं। वह धोने के लिए प्रभुस्वरूप संत हर एक को उनके अंग के मुताबिक सेवा देते हैं। सो, प्रभु का दृढ़ आसरा रखने वाले को तो केवल पड़े ही रहना है। 'पड़े रहना' का अर्थ निष्क्रियता नहीं है, लेकिन संत के होकर जीते रहना और (प्रगट प्रभु के) संबंधवाले में मनुष्यभाव नहीं लाना–यह। और... वे–संबंध वाले (हमारे) देहभाव तो दिखाने वाले ही हैं। पंचविषय में हमें जहाँ दिलचस्पी होगी, वह खोदने का काम उनका है। यदि यह (बात) समझ रखी हो, तो प्रसंग आने पर हम दुःखी नहीं होंगे। अनजाने में प्रारब्ध धोने का काम चालू हो, तो कष्ट होगा ही। उस समय दुःखी ना होना, उसका नाम–'पड़े रहना' कहा जाए और... इस हेतु श्रद्धा और महिमा पकड़े रखना।

ऐसे बड़े पुरुष मिले हैं और उन्होंने कृपा करी; वही बहुत बड़ी बात हो गई। हम मनुष्य ठहरे, सो जीवन जिए बिना तो गुजारा नहीं है। इसलिए सहजभाव से जो सूझे वैसे किया करना। वे ऐसे संजोग दे देंगे और आसानी से सेवा करवा लेंगे। **सेवा करने का हमारा मन हो, ऐसा वे कर देंगे और यूं हम में जो निपुणता होगी, उसे उपयोग में ले लेंगे।**

भगवान और संत के लिए ही जीवन जीने की वासना हो जाए, वह **'दृष्टा स्थापित'** हुआ कहा जाए। ऐसी आत्मबुद्धि होने के बाद फिर (हमें) और किसके होकर जीवन जीने का मन हो पाएगा?... पर, वर्ता

जाए या ना वर्ता जाए – वो प्रारब्ध के पाश हैं। उसके लिए पड़े ही रहना और किसी से बराबरी नहीं करनी। तो, दुःख नहीं लगेगा और प्रभु इस रास्ते हँसते - खेलते ले जाएंगे। **तुलना, मान, बड़प्पन और अकड़ एक-दूसरे से होड़ करवाती है; यह नहीं करनी। बाकी का सब कुछ तो जो मिले हैं वे कर लेंगे।** सो, विश्वास रखना।

आपस में संप, सुहृद्‌भाव और एकता रख कर जीना। **'इस मार्ग में मैं कुछ जानता नहीं' – यूं मान कर शुरु करना। सभी के प्रारब्ध के साथ खेल खेले ऐसे बड़े मिले हैं।** सो, कोई ऐसा करता है – वैसा करता है – यूं क्यों कहना? **उसके प्रारब्ध के मुताबिक महाराज सॅट करने वाले ही हैं।** सॅट करने वाले कैसे मिले हैं! बस, इतना ही देख लेना है। शायद वह सॅट करने वाला ही अधूरा होगा तो? ऐसी हमें शंका होगी; पर ऐसे सेम्पल्स भी बापा ने ही तैयार करके दिए हैं। जबरदस्त व्यापक स्वरूप तैयार हो गए हैं। जो बापा के हैं, उन्हें अपना मान कर वे जी रहे हैं।

ऐसे **भिन्न अंग वाले का भीतर से गुण लेकर गाएंगे, तो वे गुण हम में आ जाएंगे। ऐसा सस्ता है – यह! तो ये ही क्यों ना कर लें?** सभी सुख - सुख से आगे जाएं ऐसी बड़े - सब प्रार्थना किया करें। ऐसी एकता – वही 'स्वरहित भाव'! यूं सुख - सुख और सरलता से जाने का रास्ता मिल गया है। भिन्न प्रकार के प्रारब्ध वाले और रीति वाले – लेकिन कल्याण एक सरीखा कर दें – ऐसे मुक्त तैयार हो गए हैं और इनमें हमें प्रतीति हो गई है। सो, हमें जिससे लगाव है, उसकी आज्ञा का पालन करना है और उनमें मनुष्यभाव नहीं लाना। **'यह एक जिंदगी स्वामी पर न्योछावर कर दी' – ऐसा मानना। 'न्योच्छावर कर दी' यानि? मर नहीं जाना है। आनंद करना है, खाना है, पीना है और सुख - सुख से (हमारे चैतन्य की प्रगति) करवानी है। इस हेतु व्यापार - धंधा, नौकरी जो भी करते हैं वह तो किया ही करना है; लेकिन अभाव - अवगुण नहीं लेना – यह एक बात पकड़े रखनी है।**

ऐसे दिव्यभाव से आसरा रखना – इसे ही महाराज ने 'परमसत्य' कहा है, जो शास्त्रों से भी मिलता आता है। गीता में श्री कृष्ण भगवान ने कहा – 'तेरे मन के माने सभी धर्मों को छोड़ कर मेरी शरण में आ, मैं तुझे सभी पापों से मुक्त कर दूँगा।' हमें ऐसे – बिजली और वड़वानल जैसे संत मिले हैं; उनका आसरा रख करके **'मैं कुछ नहीं', इतना ही पकड़े रख कर जिया करना है।** यदि वर्ता ना जाए तो कह देना – 'मुझ से यह नहीं होता है'; यह मेरे इंद्रियों - अंतःकरण का दोष है। लेकिन बहानेबाजी करके रोष नहीं जताना और जो भी आ पड़े उसे सह लेना। **'सहन करना' लगता है, वह भी देहभाव ही है।** वह टल जाने के बाद हमें ही लगेगा कि यह तो हमें हल्का फूल करने के लिए ऑपरेशन ही था। इसे तो प्रभु ने साधन ही बनाया था – ऐसा दिखाई देगा।

यूं, यही सत्य है कि – **किसी का दोष देखना नहीं और 'स्वामी स्वामी' किया करना।** 'किसी का नहीं देखना' – वह साधन नहीं है; लेकिन हमारे प्रारब्ध के वश होकर देखने का (हमें) मन हो जाता है। इस जगत का मान, बड़प्पन, रिद्धि और सिद्धि को देख कर हमें ऐसा होता है कि – ऐसा क्यों और वैसा क्यों? लेकिन वह छोड़ कर उपरोक्त सत्य को पकड़े रखना। **संप, सुहृद्‌भाव और एकता रख कर संगठनभाव से जीएंगे, उसी का नाम बापा के होकर जिए। यह रखेंगे, तो जहाँ भी होंगे वहाँ – इंग्लैंड, अमेरिका या यहाँ – हमें जो व्यवसाय मिला हो उसमें आनंद के फुव्वारे उड़ाते हो जाएंगे।**

सभी बड़े एकांतिक संत बापा के ही स्वरूप हैं, ऐसा माहात्म्य समझें। **हमें जिसके साथ लगाव है, उसका सेवन भले करें; लेकिन दूसरे बड़ों में मनुष्यभाव नहीं लाना। उनका वचन भी योगी में से ही आया है, यूं मान कर पालते हो जाना। 'बापा उनमें से रह कर बोल रहे हैं' – यूं मानना और अपनी भूल सुधारनी।** यूं संप – सुहृद्भाव से जीना। इस बात को मान कर जो जिएं हैं – वर्ते हैं, उसका आज परिणाम दिखाई दे रहा है। ऐसे मुक्त भले कहीं भी जाएं, उन्हें जगत छू नहीं पाता – ऐसा कर दिया है और उन सभी के अंतर में ठंडक है, सुख है, शांति है और बापा भी राजी हैं।

अब हमें इतना ही करना है कि परेशानी, विक्षेप, अभाव में जाना नहीं। अक्षरधामरूप रहना है। बाकी जो आ पड़े, वह सह लेना है और सहना लगता है, वह देहभाव है। यूं मान कर अखंड धामरूप रहते हुए, जो सूझे वैसे करा करें तो हमारे वर्तन से और हमारे आंदोलनों से जगत को शांति मिलेगी, यूं (हमारा) वर्तन ही बातें करेगा और बोलेगा।

उत्तरोत्तर एक-दूसरे की महिमा समझनी। (प्रभु के) संबंध वाले सभी कैसे सुखी रहें, ऐसा करना। **किसी को कुछ काम हो, तो हम सभी उसमें हाथ बटोरें। बापा को राजी कर लेने का हेतु रख कर, संप – सुहृद्भाव रखना और जो सहना पड़े वो सह लेना। परिवार का कैसे सहन कर लेते हैं? यूं सत्संग में सहन करते हो जाएं** और आनंद किया करें, ऐसी बापा को आज प्रार्थना है।

– प.पू. पप्पाजी महाराज, १९७३

✡✡✡

२९ मार्च, २००८ – प.पू. गुरुजी के प्रागट्योत्सव की पूर्व संध्या पर

प.भ. कानजीभाई (राजकोट)

...मैं खूब-खूब धन्य हूँ। गुरुजी के प्रागट्य दिन पर मैं लगभग हर साल आता हूँ। जन्मदिन को जब १५ दिन – एक महीना बाकी रहता है, तो उनका मैगनेट मेरे को यहां ले आता है। आज हम **सब हरिभक्त, गुरुजी की नाव में काकाजी का एक परिवार बन कर बैठे हैं... जहां-जहां दृष्टि करो वहां काकाजी दिखाई देते हैं।**

...आज से १० साल पहले मैं पवई गया था, तो बात सुनी थी कि यहां मंदिर बनने वाला है। मुझे ऐसा लग रहा था कि यहाँ ये कैसे पॉसीबल होगा? पर, आज **पवई में जाकर आप देखो**, तो वो अमेरिका जैसा बन गया है – एक छोटा अमेरिका बन गया है। और... वहां साक्षात् महाराज – काकाजी को विराजमान किए हैं। वहाँ **भरतभाई-वशीभाई और सभी ने हरिभक्तों के सुख-दुःख के साथी बन कर ऐसा करा है कि सब को लगता है कि ये मंदिर नहीं होता तो हम कहां जाएंगे?** पैसे से सब कुछ नहीं होता है। **मन की शांति के लिए – स्ट्रेस निकालने की जगह संतों के चरणों में है।**

...आज गुरुजी के विचारों में ऐसा होता है कि काकाजी के आसरे यहां जो बैठे हैं, उनको कोई भी दुःख नहीं होना चाहिए। ये सब काकाजी के स्वरूप में वो कर रहे हैं। भगवान कोई जेब में पैसा नहीं डाल देते। कर्म तो सबको करना होता है, पर हमें कौन साथ दे रहा है? हमें कौन हिम्मत दे रहा है? कौन हमारे परिवार को पूछ रहा है?

ये सब युवानों में देखो! युवानों में कितनी ताकत आ गई आज। **आज भारत का युवा वर्ग व्यसन के संग से कितना नष्ट हो रहा है –** ये टी.वी. के माध्यम से! ये युवानों को **– अब्जों युवानों को सुधारने के लिए संतों ने ये झंडा लगवाया है।** अब्जों रुपयों का फायदा है! छोटा बच्चा इधर आता है, उसका कैसा संस्कार बनता है? संस्कार के लिए ही तो हमारा उद्यम है – कमाई है। बंगला है, गाड़ी है, फैक्ट्री है; तो भी मेरा वारिसदार कैसा होगा – यह सबको चिंता है। मैं जाऊं तो मेरा वारिसदार ये पैसों का क्या करेगा? दारू पीएंगे, उड़ा देंगे, जुआ खेलेंगे? हर घर में वो प्रश्न है। पर, आज **गुरुजी के सान्निध्य में जब परिवार इधर जुड़ जाते हैं – गुरुजी के चरणों में, तो उनको कोई चिन्ता नहीं है। आपके बच्चों की, आपके परिवार की, आपकी फेमिली की – पूरी जिम्मेदारी दीदी और गुरुजी लेकर बैठे हैं।** आपको कोई चिन्ता नहीं; आपके घर परिवार की। **हम इधर आएं; हमारा बिजनेस का क्या होगा? हमारा क्या होगा? मेरा भाई बीमार है – तो क्या होगा? वो सब काम गुरुजी देख रहे हैं।**

तो, भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि – **'गुरुजी, तुम जिओ हजारों साल' – यही हमारी प्रार्थना।** ये भारत की भूमि भगवान की भूमि है – 'गॉड लिव्ज़ इन भारत'। तो, ऐसा गुणातीत संत – पवित्र संत हमारा सुधारने – संसार को सुधारने का नारा लेकर बैठे हैं – ऐसा मैं मान रहा हूँ। **पश्चिम की संस्कृति में – इस दिल्ली केन्द्र में ऐसा भक्तिभाव से सत्संग चलता है।** जिसको मालूम नहीं – उसे यह बताएं कि दिल्ली में ऐसा होता है। हाँ, **यहाँ कोई भंडारा नहीं चलता है; यहां तो जीवन जीने की कला गुरुजी देते हैं।** हमारा जीवन कैसा होना चाहिए? पंजाब में देखो; पूरा ये प्रान्त में देखो – गुरुजी किसी को बुलाते नहीं हैं; लेकिन गुरुजी का मैगनेटिज़्म - आकर्षण ले आता है। तो हमें ज्यादा बात करनी नहीं है; परंतु मुझे मौका दिया है, तो 'खूब-खूब' धन्यवाद कहता हूँ। हम **भगवान को प्रार्थना करते हैं कि हमारा ये लास्ट जीवन गुरुजी के चरणों में समर्पित हो जाए।** जय भगवान, जय स्वामिनारायण।

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी (मुंबई)

...एक बार ऐसे ही गुरुजी के प्रागट्य दिन के लिए हम सब यहां इकट्ठे हुए थे। तब **साहेबजी** ने अपने आशीर्वचन में एक बात कही थी कि ऐसे संत कभी अपनी महिमा कहने नहीं देते, वो अपने आप को हमेशा छुपा के रखते हैं; लेकिन उनके ऐसे प्रागट्य दिन पर हमें एक छूट मिलती है कि हम उनकी महिमा गा सकते हैं। वैसे तो इनकी जितनी महिमा गाई जाए उतनी कम है और जितना धन्यवाद किया जाए उतना कम है।

करीब १५ साल से मैं गुरुजी के संबंध में आया हूँ। अभी तक के **अपने जीवन में जो नहीं सीखा था, वो सब कुछ यहां सीखने को मिला।** कोई भी चीज हो – टाईम मॅनेजमेंट हो, इवेंट मॅनेजमेंट हो, किसी भी तरह की प्लानिंग हो, ऐसी चीजें – छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी तक – स्कूल, कॉलेज, प्रॉफॅशन में कहीं भी जो हम सीख नहीं पाए, वो सीखने का हमें यहां मौका मिला। गुरुजी को जब देखते हैं – वो पूछते करते हैं कि कितने बजे की फ्लाइट है और... बेकवर्ड कॅलक्युलेशन करते हैं। मानो ७.३० बजे वहां पहुँचना है; तो एयरपोर्ट पहुंचने के लिए यहां से एक घंटा लगता है, सो ६.३० बजे निकल जाना है; इसलिए ५.०० बजे उठ जाना है। मतलब **ऐसा परफॅक्ट देख कर हमारे अंदर भी बैठ गया है कि उसको हमेशा याद करके हम वैसे ही कॅलक्युलेशन करके सब काम करते हैं** और एकदम टाइम पर पहुँच जाते हैं। दो साल पहले बॉम्बे से **प्राची के फाधर सुधीरजी** अन्नकूट पर आए थे। हर चीज को वे ओब्जर्व कर रहे थे। ३० साल से ही इज़

एसोसिएटेड विथ मेनेजमेन्ट इन्सटीट्यूशन्स। जब गुरुजी ने उनको बातें करने को कहा, तो ही वॉज़ मच प्लेज़न्टली शॉक्ड एन्ड वो ऐसा बताना चाह रहे थे कि उन्होंने जो तीस साल में नहीं सीखा, वो यहां आकर एक दिन में देखा है! तो **हम लोग बहुत भाग्यशाली हैं कि स्पिरिच्युआलिटी की बातें तो अपने आप अंदर पड़ ही रही हैं; पर व्यवहार को चलाना – कैसे करना है वो भी सारा हमें यहाँ सिखा रहे हैं।**

हमें छोटी-छोटी चीजों की टेंशन हो जाती है। **ये एक्चुअली हमारी निष्ठा में कहीं कमी है।** मैं अभी कहीं पढ़ रहा था कि **जितना टाइम हम भगवान में नहीं रहते, उतने टाइम हमें टेन्शन हो जाती है** और उसके हिसाब से हमें वो आनंद नहीं रहता।

बरसात के दिनों में एक बौद्ध धर्म के मोंक को कहीं चार महीने के लिए रहना था। तो, कहीं एक दुकान में एरेंजमेंट हुआ था। किसी एक आदमी ने वो दुकानदार को कानाफुसी करी कि ये संत लोग एक बार घुस गए ना, तो फिर निकलेंगे नहीं। सुन कर उसको हुआ कि अरे ऐसा तो हो सकता है; खामखाह मैं फंस जाऊंगा। सो, उसने उनको मना किया कि – 'सॉरी', मैं नहीं कर पाऊंगा; आप दूसरी जगह देख लीजिए। संत तो बिना कुछ रिएक्ट करे वहां से चुपचाप निकल गए और उन्होंने दूसरी जगह कहीं अरेंजमेंट कर लिया। आगे हुआ क्या कि – बारिश आई और वो दुकान कॉलॅप्स हो गई! तो संत ने कहा – देखो, दुकानदार ने हमारे ऊपर कितनी कृपा करी थी कि पहले से हमें वहां रहने ही नहीं दिया!! कहने का मतलब यह है कि जो पॉजेटिवनेस से – जैसे साहेबजी बताते हैं कि – 'थिंक पॉज़िटिव, रेस्ट विल फॉलो' – यूं रियली ऐसा पॉज़िटिव सोच रखेंगे, तो हमें टेंशन होगा ही नहीं।

जहां तक **गुरुजी की कुटुंबभाव की बात है, वो हम देखते ही हैं कि यहां हम जुड़े थे तो ऐसा लगता था कि कोई स्पीरिच्युअल इन्सटिट्यूशन में जुड़ रहे हैं; लेकिन जब से जुड़े हैं, ऐसा लगता है कि ये तो एक परिवार में हम एड हो गए हैं और वो परिवार बढ़ता जा रहा है। यहां आप कहीं भी देखोगे – कहीं बोर्ड भी लगा होगा, तो कुटुंब की – परिवार की ही बात होती है** और... ये कोई दिखावा और कहने के लिए नहीं, या कोई बताने के लिए भी नहीं है। हक़ीक़त में हम अनुभव कर रहे हैं कि **गुरुजी ने ये एक फेमिली क्रियेट किया है।** हर एक को अपने-अपने तरीके से खूब अनुभव हुए हैं।

...ना चाहते हुए भी जाने-अनजाने में ही हर एक को बेटी के विवाह की जिम्मेदारी के बारे मन में रहता है। पर, हमें तो वो फील ही नहीं हुआ; पता ही नहीं चला कि कैसे हो गया? और... वो कोई ऐसे नहीं हो गया; वो गुरुजी ने दिव्य परिवार की तरह जो यहाँ रखा हुआ है उसी से हो गया! शादी का जो मैनेजमेंट हुआ था, मुझे या डॉली को कोई काम करने की कहीं जरुरत ही नहीं थी। जो नॉन सत्संगी लोग – हमारे व्यवहारों से जुड़े लोग आए थे, उन सबके मुंह से एक ही बात निकलती थी कि टेन्शन के बिना शादी का ऐसा अरेंजमेंट हमने कहीं देखा नहीं है। कोई किसी के बारे में कुछ कह नहीं रहा है, कहीं कोई तनाव नहीं है, तनावरहित शादी! वो कैसे पॉसीबल थी? ये सब बात मैं इसलिए कर रहा हूँ कि ये **परिवार की जो बात है वो यहां हक़ीक़त में अनुभव होती है।** ये जो हरिभक्त तैयार किए, उन्होंने सारा गुरुजी व दीदी के मार्गदर्शन में कैसे संभाला हुआ था? रियली इवेंट मॅनेजमेंट वाले भी नहीं कर सकते थे। यूं हर एक को एक निश्चिंतता हुई है। कहते हैं न कि जहां प्रभु हैं, वहाँ निश्चिंतता आपको आ जाएगी। **मतलब कि यहाँ प्रभु बैठे हैं, तो उन्हीं की वजह से निश्चिंतता आई है।** उन्हें पहचानने में जितनी हम देरी करेंगे उतना हम अपना समय गवाएंगे। अधरवाइज़

वो तो हमारे लिए सब कुछ लुटाने के लिए अपना अक्षरधाम तक यहां लेकर आए हुए हैं। **हमें सिर्फ उनकी शरण में चले जाना है और उनके आधीन हो जाना है। आधीन क्या? जैसे बच्चा माँ के ऊपर अपने आपको बिल्कुल छोड़ देता है।** वो कहां सुला रही है, कहां बैठा रही है? उसको कैसे रख रही है? वो कुछ सोचता ही नहीं है। **उस हिसाब से जो भगवान के आधीन होकर पूरा निश्चिंत रहता है; उसका काम भगवान करते रहते हैं।**

'ब्रह्मप्रवाह' में भी कई जगह लिखा है कि यदि तुम भगवान के भजन में रहते हो, तो तुम्हारा व्यवहार चलाना - वो भगवान की जिम्मेदारी है। और... सच में तो – अधरवाइज़ भी, हमारा व्यवहार वे ही चलाते हैं। सुख-दुःख जो आते हैं, वो प्रारब्धवश हैं; बाकी चलाते वही हैं। तो, आज हमें इस संबंध का खूब लाभ मिल रहा है। मैं तो कई बार ऐसा सोचता रहता हूँ कि – **लाइफ का एक-एक पल, एक-एक दिन जो भी है – उसको हम खूब यूटीलाइज़ करें और गुरुजी के संबंध का आनंद लें।** हमसे ज्यादा हमारे लिए वो जाग्रत रह करके हमारे सारे काम कर रहे हैं। तो खूब-खूब धन्यवाद है काकाजी को, गुरुजी को जो उन्होंने हमें अपने संबंध में लिया। और... भगवान स्वामिनारायण व सब गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि गुरुजी हजारों साल हमारे साथ रहें; उनका स्वास्थ्य खूब अच्छा रहे... इसी के साथ – सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.भ. पियुषभाई (सुरत, गुणातीत ज्योत)

...**यहाँ गुरुजी के पास** आना होता है – उत्सव कोई भी हो, गुरुजी का प्रागट्य दिन हो, मूर्तिप्रतिष्ठा का दिन हो, पर यहाँ के माहौल में **ताड़देव का इतिहास, काकाजी, पप्पाजी, बा – वो यहाँ जीवंत लगता है** और... यहाँ **ऐसा लगता है कि काकाजी और पप्पाजी को अलग नहीं कर सकते।** क्यों? **गुरुजी ने अपने वर्तन से यहाँ ऐसा कार्य करा है।**

विमुख प्रकरण हुआ और गुरुजी, आज से कितने साल पहले, जब काकाजी के सान्निध्य का उनको सुख लेना था, काकाजी के साथ रहना था – ऐसे समय में काकाजी ने उनको आदेश दिया कि तुम दिल्ली जाओ। काकाजी ने उन्हें साथ नहीं रखा, लाड़ नहीं लड़ाए। ऐसे ही पू. भरतभाई और वशीभाई को आज देखते हैं, उनके द्वारा काकाजी जीवंत हैं। यहाँ हाजराहजूर हैं। गुरुजी ने भी यह चीज करी।

नवंबर में हम 'परमहंस' ग्रुप के चालीस युवकों को लेकर यहाँ आए थे; हरिद्वार – ऋषिकेश जाने वाले थे। गुरुजी को पहले से कहलवाया था कि हम मंदिर आएंगे, प्रसाद लेंगे और आपका लाभ लेंगे। पौना घंटा-घंटा गुरुजी के सान्निध्य में बैठे, तो गुरुजी बस बैठे रहे – सबको देखें, कोई संवाद नहीं। वर्ना, स्वाभाविक है कि इतने युवक सामने बैठे हों, पर काकाजी-पप्पाजी की पहचान करा देने की ना कोई बात, दूसरी कोई ज्ञान करने की ना कोई बात – एक भी शब्द नहीं। उनके चेहरे पर थोड़ी थकान लग रही थी; सबके सामने देखें, बड़ी-बड़ी उबासी लें। पौना घंटा-घंटा पूरा हो गया। मुझे विचार आए कि सुरत से ये सब लड़के आए हैं, सबको पसंद आता होगा कि नहीं? फिर हम आगे गए, एक जगह बैठे और सबको पूछा; तो (सब) बोले बहुत ही मजा आई। **प्रभुकृपा में पप्पाजी के सामने बैठे हों और पप्पाजी कैसी मूर्ति दें, उसका दर्शन हमें गुरुजी की मूर्ति में हुआ। यहाँ के समाज को काकाजी का दर्शन तो हो ही, पर जो नए लड़के – जिन्होंने गुरुजी के पहली बार दर्शन करे हैं; उन लड़कों को भी ऐसी अनुभूति हुई कि यह हमें पप्पाजी का दर्शन**

गुरुजी ने कराया!

गुणातीतानंदस्वामी ने बातों में लिखा है कि हम चाहें तो जूनागढ़ से वड़ताल तक सड़क बाँध दें। पर जो करना है, वो नहीं होगा। गुरुजी की सड़क – **ये मंदिर को देखें तो लगता है कि अधूरा है।** मंदिर का प्लास्टर बाकी है। बाहर का बहुत सारा काम बाकी है। **पर, इतने-इतने साल काकाजी से दूर रहकर भी उन्होंने जो काम किया है, वो जो करना था – वो उन्होंने करा है। तो आज काकाजी, पप्पाजी और बा यहाँ जीवंत लगते हैं।**

और...

हम भी यही सीखने के लिए गुरुजी के ७१वें प्रागट्य दिन पर यहाँ आए हैं। सभी गुणातीत स्वरूपों का लाभ लेना है। **मुक्तों का माहात्म्य जो काकाजी, पप्पाजी, बा कराना चाहते थे, वो गुरुजी के वर्तन, वाणी और विचार में सहज – उनको देखते रहें तो हमें पता चलता है।** मैंने यहाँ के एक भाई को पूछा था, तो उन्होंने कहा शाम को यहाँ रोज सभा होती है। बहुत से मुक्त यहीं प्रसाद ले लेते हैं। **गुरुजी की ऐसी भावना कि मंदिर की रोटी खाकर भी संत समागम करो।** तो आज गुरुजी का ऐसा आकर्षण है। भक्तों के प्रति ऐसी महिमा है। तो, हम सभी भक्त, हम सभी साधक अंतर से ऐसे संबंधवाले का महिमा समझें और जो करना है वो स्वधर्मयुक्त करें – ऐसा हमें खूब-खूब बल देना। ऐसी आपके चरणों में प्रार्थना। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

पू. विज्ञानस्वामी (कंथारिया)

ऊपर मंदिर में दर्शन करने गए, वहां **'बॅप्स के आद्य संस्थापक'** – शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज, वो सूत्र पढ़ा। तब आज हमें यूँ होता है कि **अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना के लिए शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने कसनी सही और मंदिर बनाए, वे कैसी परिस्थिति में से गुजरे होंगे!** उसका इतिहास – वो प्रसंग जब हम पढ़ते हैं, तब हमें होता है कि उन्होंने खूब कसनी सही – खूब कसनी सही, बस धॅट्स इट। **अभी के गुणातीत समाज का दर्शन जो हम कर रहे हैं – सभी जगह पर, उसकी नींव में गुणातीत समाज के सर्जक पू. काकाजी और पू. पप्पाजी – उन्होंने समाज के सर्जन के लिए क्या-क्या नहीं किया?** वो प्रश्न रहता है। अक्षरपुरुषोत्तम के मंदिर बनाए जाएं और बड़ी-बड़ी सभाएं हों, पब्लिक का गॅधरिंग और ये सब – है ही; उसके साथ-साथ **गुणातीत समाज की भी इतनी ही प्रगति होती हुई हम सब देख सकते हैं। पर नींव में जो काम किया तब काकाजी और पप्पाजी ने उन दिनों कैसी कसनी में कितने साल उन्होंने गुजारे! योगीजी महाराज का काम करने के लिए काकाजी और पप्पाजी कृपा के पात्र बने। 'बहनें भगवान भजे तो क्या गलत?' यह सूत्र लिखा गया, कहा गया, पर उसके पीछे वो ज्योत की स्थापना, वो अनुपम मिशन की स्थापना, गुणातीत समाज की स्थापना, इन सबका जब विचार करें तब हमें होता है कि काकाजी और पप्पाजी ने हमारे लिए क्या नहीं किया? हम तैयार डिश पर बैठ गए हैं, इसलिए हमें उसकी गहराई का बहुत ख्याल नहीं आता।**

यहाँ साथ में **हमारे भक्तवत्सलस्वामी हैं; उनको साधु बनाया। फिर वापिस ले गए। हरिभाई साहेब के बिल्कुल सामने उनका घर था। तो, रोज़ वे काकाजी, पप्पाजी और बा के नाम की गालियाँ**

खाते। मुख्य भाग (रोल) निभाया था – काकाजी ने, मतलब सब गालियाँ खाईं थी काकाजी ने। भाव से या कुभाव से यूं उन्होंने जो गालियाँ दी होंगी, तो कहते हैं न कि उनका मनन-चिंतन हुआ होगा; सो, अच्छा तो होना ही है। तो जब वो पहली बार कंथारिया आए, तब उनके चाचा बोले कि इन लोगों का तो पानी भी नहीं पीना चाहिए। फिर थोड़ी हमारी चर्चा हुई, फिर गए। अभी थोड़े टाईम पहले, दोबारा आए थे, तब उन्होंने वहाँ खाना खाया। तब मुझे काकाजी याद आए कि जिसने उन्हें गालियाँ दी हैं, उसका भी उन्होंने कैसा भला करा? उनका नाम भगवानजीभाई। साधु बनने के बाद भी वापिस घर ले जाने के आग्रह में उनका बहुत तरीके से रोल था। उस रोल में भी उन्होंने मनन-चिंतन तो करा होगा ना कि काकाजी यहाँ हैं – वहाँ हैं, चलो वहाँ जाएं और वो सब। सत्पुरुष का वो मनन-चिंतन कितना काम करता है! वो जब जा रहे थे, तब मैंने 'जय स्वामिनारायण' किए और कहा – दोबारा आना। तो बोले - जरूर आऊँगा। भले अभाव से, पर सत्पुरुष का मनन-चिंतन उन्होंने करा, तो भी उसका इतना भला हुआ कि उनको गुण आया। पहली बार आए तब भी मैंने उनको कोई खास बात नहीं करी थी। कैसे हो वगैरह – इतना ही बस।

अभाव से जिस व्यक्ति ने उनके साथ वर्तन करा है, उसका भी भला करने वाले काकाजी, पप्पाजी और बा! उन्होंने जिस समाज की स्थापना करने के लिए दुःख सहे हैं, उसकी कल्पना भी नहीं हो सकती। एक बार पप्पाजी को मैंने कहा कि पप्पाजी, आपके - ताड़देव के पुराने प्रसंगों की बात करो। तो पप्पाजी मुझे बोले - विज्ञान, बहुत तो आज सुन सकें ऐसे भी नहीं हैं। 'सुन सके ऐसे नहीं हैं' – वो जो शब्द उन्होंने कहे; तो कैसी विपरीत परिस्थिति में से वो ताड़देव मंडल गुज़रा होगा? और फिर... पप्पाजी सहज स्वभाव से बोले कि आज उसकी किसी को जरुरत भी नहीं है। वो कैसी कसनी सही उन्होंने – शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने! गाड़ी में बैठता हूँ, तब मुझे याद आता है कि योगीजी महाराज को बैलगाड़ी भी नहीं मिलती थी। एक का बैल, दूसरे की गाड़ी और तीसरा चलाने वाला और चौथा उसको खबर देने वाला – यूं इन चार लोगों का या पाँच लोगों का मिलन हो, तब उनको लेने के लिए बैलगाड़ी सांकरदा से रणोली पहुँचे। उस परिस्थिति में से शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज गुज़रे।

काढ़ा पीते-पीते टेबल पर हमारा 'टी टॉक' चल रहा था; कौन भाई थे पता नहीं, तो बोले कि सबसे पहले यहाँ दिल्ली मंदिर में साईकिल आई, तब सबने उसका पूजन किया। साईकिल का पूजन करा! उस टाईम साईकिल आई उसकी कितनी खुशी होगी? यहीं की बात कर रहा हूँ – दिल्ली की बात कर रहा हूँ। और आज...? गाड़ियों के ढेर सब देखते हैं हम। **काकाजी और पप्पाजी ने अपने बच्चों को सुखी-सुखी कर दिया।** पर ऐसे उसका पनौता पुत्र बनना पड़ता है। **गुरुजी ऐसी व्यक्ति है कि जिन्होंने काकाजी, पप्पाजी और बा को हृदय की गहराई से, महिमा और माहात्मय से, अपने जीवन की हरेक पल में उनको रखे हैं।** अभी कोई भाई ने बात करी न, मेरे ख्याल से पियूषभाई ने कहा कि मंदिर का प्लास्टर भी अभी हुआ नहीं है। वो मंदिर न हो – यूँ कहना नहीं चाहता मैं, पर **गुरुजी ने जो काम किया है – चैतन्य मंदिर का काम किया है, जंगम तीर्थ का काम किया है। खुद ऐसे तीर्थ बने और उन्होंने परिवारों के परिवारों को ऐसा तीर्थत्व देकर तीर्थ बना दिये।** महाराज के समय में कहा जाता था कि– **'जीवनमुक्त का समाज'**। स्वामिनारायण सम्प्रदाय को जीवनमुक्त के समाज के नाम से पहचानते थे।

...पप्पाजी ने खाने से पहले दो मिनट धुन करने की बात रखी थी कि खाने से पहले दो मिनिट की धुन

करके ही सब लेना। काकाजी ने आकर कहा कि एक मिनिट मेरी। ऐसा कुछ प्रसंग है और... तीन मिनिट की धुन का हुआ कि–'हे महाराज! सामने आए मुक्त को ब्रह्म की मूर्ति मानकर–दिव्यभाव पकड़े रखकर, स्वधर्मयुक्त माहात्म्ययुक्त सेवा कर लेने का बल देना'। वो जो सूत्र बोला जाता है उसका और उसके बाद की जाने वाली क्रिया का कोई कनेक्शन नहीं है। पर, संबंधवाले को जीवनमुक्त मानने की बात आती है–संबंधवाले में महाराज देखने की बात आती है। शायद हम अपने जीवन में यह बात उतार नहीं सकते और संबंधवाले में महाराज नहीं देख सकते। तो, हम अंतर्दृष्टि करें कि हम क्यों नहीं मान सकते–उसे स्वरूप क्यों नहीं मान सकते? संबंध से स्वरूप मानने की यह बात है, संबंधवाले में महाराज देखने की बात है। तो, ये सब धीरे - धीरे हमें धक्का मार - मारकर सीढ़ी चढ़ाते हैं। पहले हमें उनके लिए ऐसा भाव होता है कि वो पूज्य हैं, दिव्य हैं, मेरे लिए गुरु के स्थान पर हैं; उसमें से गुरुहरि के स्थान पर पहुँचाने की जिम्मेदारी उनकी है। और वो उनकी फर्ज वे चूकते नहीं हैं। वो करा ही करते हैं। करना रहता है हमारा कि–हम उनको कितना याद करते हैं। **पप्पाजी** ने सूत्र दिया है कि– **'प्रथम प्रभु , फिर कदम उठाओ'।** तो दिनभर की क्रियाओं में कितनी बार हम उनको याद करते हैं और फिर काम करते हैं? अगर सचमुच सब उनके ऊपर डाल दें, तो हमें किसी तरह की कोई चिंता न रहे। ओ.पी.भाई ने बात करी न कि पूरा शादी का प्रसंग निपट गया–वहां तक उसको किसी तरह का टॅन्शन ही नहीं रहा। क्यों? तो जिस तरह महाराज के समय में पर्वतभाई के प्रसंग पर महाराज पधारे और सबको साथ में लाए; तो बस–वो तो नाचे, कूदे और आनंद करे। क्यों? तो बोले–सब महाराज संभालें; मुझे क्या चिंता? यूँ **हरेक के जीवन में–सांसारिक, व्यवहारिक कोई भी काम, कोई भी प्रश्न हो वो गुरुजी ने संभाला है।** अभी कुछ बातचीत चल रही थी; किसी भाई ने यूँ कहा कि वो भाई बीमार हैं। गुरुजी कुछ पढ़ रहे थे; तो एकदम उनकी नज़र ऊँची उठी और पूछने लगे कि कौन बीमार है? तब हमें होता है कि उनको भक्तों की–काकाजी के भक्तों, पप्पाजी के भक्तों, स्वामिनारायण भगवान के संबंधवाले भक्तों की कितनी महिमा है! उनका पढ़ने का एक तरफ रखकर पूछने लगे कि उसे क्या हुआ है? तब हमें लगता है कि यह है–'संबंध की महिमा'। **वो खुद तो संबंध की महिमा समझते ही हैं, पर वो जो उनकी समझ है–वो हमारे अंदर भी उदय कराना चाहते हैं।**

...यहाँ आते हैं तो सहज हमें अपना लगता है कि अपने घर आए। क्यों ऐसा लगता है? तो उन्होंने हम सबको 'अपना' माना है। 'यह इस समाज का–यह उस समाज का'–ऐसा उनके दिल में बिल्कुल नहीं है, उसकी छींट भी नहीं है। यह चीज बहुत विशेष है कि किसी का भी संबंधवाला आए और उसके लिए ऐसा ही भाव रहे, जैसा कि खुद का शिष्य हो और उसके साथ जैसी आत्मीयता से वर्तन हो–ऐसा ही उस संबंधवाले के लिए हो! तब ऐसा लगता है कि यह भगवान स्वामिनारायण का जो संकल्प था–जंगम तीर्थ बनाने का, ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करने का गुणातीत का जो संकल्प था, वो परब्रह्म की भक्ति करने के लिए स्थान उन्होंने प्राप्त कर लिया है। वो गुणातीत अवस्था पर वो पहुँच गए हैं। तो ही यह चीज बन सकती है, वर्ना नहीं बन सकती। अपना थोड़ा 'स्व' तो आ ही जाए, अपना कोई कण तो आ ही जाए, अपनी कोई रीत आ ही जाए। थोड़ी यूँ पार्शियालिटी जैसा आ ही जाए। यहाँ वह बिल्कुल देखने को नहीं मिलता। धॅट ईज़ मुकुंदजीवनस्वामी!

आज उनके ७१वें प्रागट्य दिन पर हम सब यह प्रार्थना करें कि **काकाजी, पप्पाजी और बा जिस**

समाज की स्थापना करना चाहते थे, उसकी नींव में, उसके लिंटर लेवल के समय, उसकी कलश विधि के समय – कहीं तो अपना नंबर लग गया! हम सभी पार उतर गए कि उनकी लिस्ट में अपना नाम है। हम कैसे हैं – कैसे नहीं, वो सब वे जानते ही हैं। बाजार में मटका लेंगे, वो भी हम ठोक कर लेंगे। हमें समझ नहीं आता होगा तो भी नारियल लेंगे न – वो भी सिक्के से ठोक कर लेंगे। उस आवाज़ की भले अपने को पहचान नहीं पड़ती होगी, तो भी हम ऐसा करेंगे – यह सहज मानव स्वभाव है। जबकि **ये पुरुष चैतन्यदर्शी हैं, अंतर्यामी हैं; अंदर का और बाहर का अपना सब कुछ जानते हैं, अपने स्वभाव-प्रकृति सहित हमें जानते हैं। फिर भी उन्होंने हमें ग्रहण करे हैं। तो, अपने जैसा भाग्यशाली कोई नहीं है। उनके पन्ने में अपना नाम लिख गया है – बस।** अपनी फर्ज हुई पूरी। **काकाजी** कहते थे – एकांतिक को उल्लू बनाकर भी उसके जीव में स्थान ले लो। हम सब नसीबदार कि उनकी लिस्ट में अपना नाम है। बस, **अपना कोई ऐसा वर्तन न हो जिससे कि लिस्ट में से अपना नाम कट जाए। अभाव-अवगुण, खटपट, झंझट – ये ऐसी भयंकर चीजे हैं जो अपना नाम लिस्ट में से कटवा दें, ईरेज करवा दें। संबंध से स्वरुप मानने की बात, गुणातीत पुरुषों के परिश्रम की तरफ नज़र रखने की बात हमारे रोम-रोम में हमेशा के लिए व्यापक रहे।**

गुरुजी के चरणों में हम सब यह प्रार्थना करें कि **काकाजी और पप्पाजी** ने आपके जीवन में जो काम किया है, वो आप भूल नहीं सकते और आपके जीव में काकाजी का स्थान था, तो आपने हम सभी के जीव में काकाजी, पप्पाजी और बा का स्थान दिया है। वैसे हम सभी के जीव के अंदर, रोम रोम में – **'गुणातीत समाज के आद्यसर्जक', वो हमारे जीव में से किसी भी वजह से, कभी भी, किसी भी विचार से, किसी भी वर्तन से, तनिक भी-तनिक भी, मोहताज़ हो ऐसा हमारा वर्तन न हो**, ऐसी आप हम सभी पर कृपा करना। हम सभी को आशीर्वाद से ऐसा बना देना। कुछ चीजे खुद करनी होती हैं, कुछ चीजे आशीर्वाद से होती हैं। तो आज गुरुजी के चरणों में, जो बात उन्हें साध्य हैं – उन्होंने सिद्ध करी हुई हैं, वो हम उनके पास मांगे। जय स्वामिनारायण।

प.भ. कौशिकभाई (एरु)

...काफी सालों से मैं देखता आ रहा हूँ, पिछले साल भी मैंने देखा कि उनके प्रागट्य दिन स्टेज पर उन्होंने हरिप्रसादस्वामी व साहेबजी को आगे किया और वो चौथी पांचवीं चॅयर पर बैठे थे। अभी भी हमारे स्वामिजी को बीच में बिठाए हैं! ये उनका दासत्व है! साहेबजी से मेरी नम्र प्रार्थना है – **पप्पाजी ने लिख कर दिया है कि गुरुजी 'सद्‌गुरु' नहीं हैं, 'गुणातीत स्वरूप' हैं।** काकाजी ने कहा है – मेरा बड़ा भाई कभी झूठ नहीं बोलता और फोकट में कभी सर्टिफिकेट नहीं देता। तो साहेबजी और स्वामिजी दोनों को प्रार्थना है कि आज तो ठीक है, पर कल हमें गुरुजी का बीच में दर्शन करना है। यह आपकी और हमारे स्वामिजी की जिम्मेदारी है – ऐसी आपके चरणों में हमारी प्रार्थना है।

पर...ऐसा दासत्व – ये चमत्कार हुआ है। गुरुजी के पूर्वाश्रम की बिरादरी के हम लोग हैं... हम **'अनाविल'** अपने आपको सुपर समझते हैं। स्वामी आनंद करके बहुत बड़े संत हो गए – उन्होंने भी लिखा है कि 'अनाविल देसाई' जो हैं, वो बड़े खंतीले, मंतीले, तंतीले और जंतीले होते हैं। तब मैं विचार करता हूँ कि **काकाजी-**

पप्पाजी कैसे पुरुष होंगे कि ऐसे गुण धर्म वाले कास्ट में जो गुरुजी ने जन्म लिया और उसको ऐसा 'दास' बना दिया! उसको कोई जिद्द नहीं है। जिद्द एक ही है – स्वामिजी को, साहेबजी को, हरिप्रसादस्वामी को – सबको आगे रखने की। ये सब मैं यहाँ देख रहा हूँ – ये समाज में भी मैं देख रहा हूँ। सभी बीच में सुरत आए थे। मैं देख रहा था; ये छोटा-सा, प्यारा-सा बच्चा **'नक्षु'** है – उसकी बर्थडे कैसे सेलीब्रेट की जाए – उसका चिंतन सुरत में बैठे-बैठे गुरुजी कर रहे थे। उसकी पहली सालगिरह थी। इसका जतन – इसका चिंतन! मैं तो वो भी सोच कर हैरान था कि बच्चा कितना भाग्यशाली होगा? हम (अनाविल) लोग भी वैसे ही भाग्यशाली हैं क्योंकि हम तो भगवान रामचन्द्रजी के टाईम से हैं – उन्होंने हमको चुना था। आदिवासियों से ब्राह्मण बनाए और...स्वामिनारायण भगवान ने (अब) हमें यहां डाल दिया।

...ये पूरे समाज में मुस्कान देखते हैं तब पता चलता है कि जैसे पप्पाजी ने सोफे पर बैठ के कुछ नहीं किया – कुछ बोला करा नहीं – सिर्फ मूर्ति का दर्शन दिया; ये गुरुजी भी वही कर रहे हैं। गुरुजी को ऐसी सभा भी बहुत पसंद नहीं है। सुरत आए थे तो बोले थे कि सभा नहीं रखना – वहां बैठ कर हम गोष्ठि करेंगे। फिर भी सब कुछ किया! ये भी हक़ीक़त है – जो हम देख रहे हैं। यही एक प्रमाण है इधर। और प्रमाण हमको क्या चाहिए? अभी कोई प्रमाण नहीं चाहिए हमको। इसलिए आज सिर्फ एक प्रार्थना ही करनी है। वो भी यही है कि जैसे काकाजी-पप्पाजी ने कहा और... ऐसा कोई दिन नहीं गया होगा, काकाजी ना बोले हों कि – 'वो भी डिवाईन – वो भी डिवाईन – वो भी डिवाईन – अति से अति दुराचारी भी डिवाईन'! अभी तो कुछ बचा ही नहीं इस समाज में। सब डिवाईन ही है; डिवाईन-डिवाईन। और... ये मौज को लूटना है। न लूट पाए वो हमारी खोट है। सचमुच में (खोट) हमारी रहेगी और अपने आप में दुःखी रहेंगे। सिर्फ प्रार्थना इतनी है कि **इसी जन्म में आप जो ऊंचाई पर हमको ले जाने की कोशिश कर रहे हैं, वो सचमुच में हमारे जीवन में साकार बने।** गुरुजी को हम तो क्या धन्यवाद देंगे? लेकिन गुरुजी को भी ऐसी एक प्रार्थना है कि भक्तों के लिए – भक्तों के सुख के लिए... आज अगर छोटे मुंह से बड़ी बात हो गई हो, तो साहेबजी को, स्वामिजी को और गुरुजी को प्रार्थना है कि क्षमा करें और गुरुजी सचमुच में हम सबकी प्रार्थना कल स्वीकार करके हमको ऐसा दर्शन दें। यही सभी प्रत्यक्ष स्वरूपों के चरणों में आज की प्रार्थना।

प.भ. मोहन बंसलजी

आदरणीय गुरुजी आप क्या हैं? कैसे कहूं? इस बात पर मैं विचार कर रहा था और मेरे को ये समझ नहीं आ रहा था कि मैं आपके लिए क्या कहूं? मेरे दिल ने जो कहा वो मैं आपको सुना रहा हूँ। मेरा दिल कहता है –

आप हर तड़पते दिल के अरमान हो, आप हर दिल की धड़कन हो, आप हर दिल की जान हो।
आप इंतजार हो हर सूखती निगाहों के। आप करार हो – हर दुःखी आहों के।
आप क्या हो गुरुजी कैसे कहूं?
आप आवाज़ – हर डूबती सांस की, बजता हर दिल में वो साज हो।
आप ग्रंथ, वेद हो, पुराण हो। आप समाते रहते हो रग-रग में सरूर बन कर।
आप सबका धर्म हो, ईमान हो, किस्मत हो, शान हो, मान हो।

गुरुजी कैसे कहूं? मेरे को तो समझ नहीं आता कि आप क्या हो?
आप हर टूटती उम्मीद की आस हो। आप हर समय हमारे पास हो।
आप कभी आंखों में बसते हो, तो कभी आंखों से बहते हो।
गुरुजी मेरा एक निवेदन है – मैंने लिखा है कि आप हर टूटती उम्मीद की आस हो।
आप हर समय हमारे पास हो कि आप कभी आंखों में बसते हो, तो कभी आंखों से बहते हो।
आप क्या हो मैं कैसे कहूं ?
आप इश्क हो, आप प्यार हो, आप मोहब्बत हो, आप आरजू हो, आप हम सबकी चाहत हो।
आप कुदरत हो, दाता हो, मालिक हो – हम सबकी जान हो।
आप क्या हो गुरुजी कैसे कहूं?
ऐसे मेरे पास कोई शब्द नहीं, जो सोचता हूँ; लगता है वो तो आप हो ही हो।
आगे मैंने लिखा है – आप हमारे हर सजदे का मुकाम हो।
सजदा का मतलब हर विचार, हर इच्छा, हर चाहत के मुकाम हो
और
फिर मेरे को लगता है कि नहीं, आप हमारे सजदे हो।
पहले में सोचता हूँ कि आप हमारे हर सजदे के मुकाम हो,
पर साथ ही साथ सोचने को मजबूर होना पड़ता है कि –
आप हमारे सजदे हो, इबादत हो, बन्दगी हो, तमन्ना हो, ख़्वाईश हो – आप क्या नहीं हो, गुरुजी कैसे कहूँ?

प.भ. इलेशभाई (वल्लभ विद्यानगर)

...हर रोज शाम को ७.०० – ७.३० बजे इधर सभा होती है। कल वो पूरी हुई और इधर के **भक्तराज राजूभाई** के नए स्कूटर का पूजन हुआ। गुरुजी ने धुन करवा कर बाद में पूजन किया था। और... आज सुबह अपना पुराना स्कूटर लेकर उन्होंने मंदिर में प्रवेश करा, वो देख कर गुरुजी एकदम बोले कि ये क्या डब्बा जैसा पुराना ही लेकर आए? कल ही पूजन किया नई गाड़ी का और तुम पुरानी ही लेकर आए? बहुत सहजता से उन्होंने बोला – 'हाँ गुरुजी'। लेकिन बाद में बोले कि आपने तो बड़ी 'मर्सीडीज़' का पूजन करा हो, इसी तरह १०० – १५० भक्तों के बीच किया। तो, गुरुजी ने बोला – राजा, साइकिल भी रखी होती, तो उसका भी जैसे तुम प्लेन लाए हो, वैसे पूजन किया होता। ये जो **माहात्म्य की दृष्टि और भक्त के हृदय में स्थान लेने का जो तरीका है, वो 'गुणातीत स्वरूप' का है।** इधर आकर रीयल में दर्शन क्या करने का? मुझे कुछ भजन की सेवा दी थी, लेकिन ऐसे दर्शन करने में बहुत आनंद आता है, दर्शन करके बस आनंद ही आनंद होता है।

महाराज, स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज और ये पिछले साल सर्व गुणातीत सत्पुरुषों ने काकाजी के साथ पप्पाजी की मूर्ति बिठाई। वो जो नीचे लिखा हुआ टाईटल – **'गुणातीत समाज के आद्यसर्जक'** – वो उनकी (प.पू. गुरुजी की) आवाज़ है। **ये जो हम सब 'योगी परिवार' अभी जो आनंद कर रहा है, वो ये दोनों – काकाजी और पप्पाजी की छत्रछाया, उनके आशीर्वाद, उनकी मेहनत,**

उनकी कृपा से ही ये सब है। वो कभी-कभी-कभी हमें भूलना नहीं है। चाहे कहीं भी, कितने भी बड़े हों। लेकिन जिनकी वजह से हम हैं। **जैसे पुत्र उसके माता और पिता को कभी भूलता नहीं है, वैसे काकाजी-पप्पाजी वो पूरे 'योगी परिवार' के प्राण हैं।**

दूसरी बात 'कुटुंबभाव' है। हृदय से गुरुजी की ये आवाज़ मैं सुन रहा हूँ कि सबको इकट्ठा करना है। सब एक ही कुटुंब के हैं। उन्होंने सिर्फ बोला नहीं है, लेकिन मैं समझता हूँ कि **जैसे एक बड़ा कुटुंब हो और उसमें कोई प्रसंग हो; चाहे कोई जन्मदिन का हो, चाहे कोई लग्न प्रसंग हो, लेकिन सभी कुटुंबीजनों – इंडिया या परदेश में कहीं भी रहते हैं; वो प्रसंग पर हाज़िर होते ही हैं – यूं ऐसे हमारे गुणातीत समाज के अंदर छोटे-मोटे जो भी ऐसे प्रसंग हों, उसमें – एटलिस्ट वो टाइम तो हम सब 'एक होकर' आनंद करें ऐसी अंदर की भावना गुरुजी की हमेशा रहती है।** और... आज हम ये दर्शन कर रहे हैं कि **'योगी परिवार'** के सभी (यहां) हैं... कल स्वामिजी भी पधारेंगे। गुरुजी ने गोष्ठि में एक छोटी बात बताई थी कि – अब मुझे मालूम पड़ा कि काकाजी स्वयं क्यों कहते थे कि – 'राजा, मेरा जन्मदिन है तो आना'। गुरुजी भी अपने प्रागट्य दिन पर वैसे किसी को बुलाते नहीं; वो तो चाहते ही नहीं हैं। लेकिन गुरुजी ने बोला कि इस निमित्त हमारे जो कुटुंबी हैं – पूरे योगी परिवार के – वो इकट्ठे तो होवें। ऐसी भावना रख कर हम सबको इधर ७१वां प्रागट्य दिन पर यहाँ इकट्ठा किया है। हम सब को **'संप, सुहृद्भाव और एकता'** का सूत्र देकर - स्वामिजी भी उसके ऊपर अभी भार देते हुए सभी जगह पर आशीर्वाद देते रहते हैं। इसका ये दूसरा स्वरूप – **'कुटुंबभावना' हम सब में उदित हो – रीयल में हृदय से उसका स्वीकार हो – ऐसी आज ये गुणातीत स्वरूपों - जो इधर भी प्रत्यक्ष हैं, उन सभी के चरणों में प्रार्थना है।** ऐसा अंतर का सत्संग हम कर सकें और आनंद को लूट सकें और लास्ट में स्वरूपों के चरणों में यही एक प्रार्थना कि **गुरुजी की पूरे समाज को बहुत ही जरुरत है, तो इनकी तबियत अच्छे से अच्छी रहे ऐसी कृपा करें** – जय स्वामिनारायण।

प.पू. भरतभाई (पवई - मुंबई)

प.पू. गुरुजी प्रागट्य पर्वोत्सव का जय स्वामिनारायण। गुरुजी का ७१वां प्रागट्य दिन है। आज हम सब **'योगी परिवार'** जिसको बोलते हैं – **जिसके कुटुंबभाव की बात करते हैं**, वो सब इकट्ठे हुए हैं। गुरुजी को फोन में जब बताया कि हम बम्बई से सब भक्त लोग आ रहे हैं, तो गुरुजी ने एक ही बात बताई कि – 'बस! मुझे तो वही आनंद है कि आप सब यहां आ रहे हो और हम सब इकट्ठे हो रहे हैं, हिल-मिल रहे हैं – वही बड़ा आनंद है। बस आप आओ'। **गुरुजी की भावना यही है और वो उन्होंने यहां सभी भक्तों के अंदर आत्मीयता प्रगट करके – उसका दर्शन हमें कराते हैं। यहां भक्त का – सब भक्तों का अंदरोअंदर का आत्मीयभाव देखें तो कोई अलग दिखे।** गुरुजी ने ऐसा जीवन जीकर हमारे सबके अंदर ये बीज बोया।

ये बात है माहात्म्य की; वो ऐसे - वैसे नहीं आती है। बहुत कठिन है। मगर **गुरुजी ने इतना माहात्म्य पूरे गुणातीत समाज के छोटे-छोटे सभी भक्तों का समझा, तो उनके साथ जुड़े हुए सभी भक्तों में भी वो माहात्म्य आ जाएगा।** नहीं तो ऐसा माहात्म्य आना वो कठिन बात है।

हमारे **अश्विनभाई** बात करते हैं कि एक बार हम सब लोग दिल्ली स्टेशन पर आए थे और **हरिभाई साहेबजी** भी थे हमारे साथ; सब साथ में आए थे। तो, गुरुजी का सब जो कार्य होता है – सब एकदम बराबर

परफॅक्ट होता है। कौन-सी गाड़ी में किसको लाना है, कैसे लाना है, किस तरह से उसको कहां लेकर जाना है – वो सब पहले से फिक्स हो जाता है और पूरे महिमा के साथ उसका दर्शन होता है। एक बस थी उसमें सब हरिभक्तों को लेकर जाना था; साथ में दो-तीन गाड़ी थी। हरिभाई साहेब तो हम सबके साथ इतने हिले-मिले थे, सो सब हरिभक्तों के साथ बस में बैठ कर आनंद करते जाने के लिए वे तो बस में बैठ गए। **आनंदी दीदी** वहां हरिभाई साहेब को ढूंढती थीं कि वे कहां हैं? क्योंकि उनको गाड़ी में लेकर जाना था। बाद में उनको पता चला कि वो तो बस में बैठे हैं। तो आनंदी दीदी ने अश्विनभाई को बोला कि आप हरिभाई साहेब को बोलो कि आप गाड़ी में आओ। अगर आप बस में जाओगे तो गुरुजी मुझे मंदिर में नहीं आने देंगे; क्योंकि आप ऐसे गुणातीत स्वरूप हो और आप को गाड़ी में आना है। इसलिए आपको प्रार्थना है कि आप गाड़ी में आओ। ऐसा एक माहात्म्य है इनमें। ऐसा भी नहीं कि आप नहीं बैठोगे तो क्या? गुरुजी राजी होंगे, गुरुजी प्रसन्न होंगे और इसके लिए मुझे ये करना ही है। **इधर के जो सब हरिभक्त हैं, वो गुरुजी के साथ इसी तरह से जुड़े हैं कि गुरुजी जो बताए वो करना है।** आशिष की वाईफ को नाम दिया है 'धुन'। नाम ही धुन! वो छोटा बच्चा है – उसको नाम क्या दिया 'नक्षत्र'। कहने का मतलब कि – क्या ये बात अच्छी लगती है? मगर वो जो फेमिली है – जो उसके मां बाप हैं, उन्हें यह स्वीकार होना – वो गुरुजी के प्रति एक ऐसा माहात्म्य का भाव होगा, तो ही हो सकेगा, नहीं तो नहीं हो सकेगा। यह बात सामान्य लगती है, मगर समाज में कोई लव मैरेज करके आएगा तो चलेगा; मगर गुरुजी बताएंगे कि इनके साथ आप शादी कर लो, वो स्वीकार करना बहुत कठिन है – जैसे पुरी साहब के लड़के की ओ.पी. की लड़की से शादी करी। कल मुझे गुरुजी बता रहे थे – जानी साहेब के (पोते) पिन्टु की शादी पंजाबी लड़की से करी है। अभी गुजराती ब्राह्मण और उसकी इस तरह से शादी करना बहुत कठिन है – एक्सेप्ट करना। वो भी ब्राह्मण है, मगर कहने का मतलब क्या है कि गुरुजी के वचन से जीवन जीना – वो कठिन है। हमारे यहां एक बहन है – वो कनुभाई दवे की बेटी-निधि, उसको शादी करनी थी। मगर गुरुजी ने बोला कि इस लड़के के साथ शादी नहीं करना, वो उसने स्वीकार कर लिया! कहने का मतलब कि यह बात कठिन है; और... ज्यादातर बहनों को तो यूं स्वीकार करना कठिन होता है। 'मैंने तो इसको पसंद किया, मुझे तो इसी से करना है; चाहे कुछ भी करो – आप मेरे लिए प्रार्थना करो कि हो ही जाए' – वे ऐसा बोलेंगे। पर गुरुजी ने बोला और तुरंत स्वीकार करके, आज भी अच्छी तरह से वो जीवन जीती है। उसके लिए सही धन्यवाद है गुरुजी को कि ऐसा माहात्म्य डाला है और वो माहात्म्य ऐसे नहीं आता है। गुरुजी उसके लिए भजन करते हैं, तो हम ऐसा जीवन जी पाते हैं और इसी तरह से एक दूसरे में आत्मीयभाव - कुटुंबभाव आता है।

... गुणातीतानंदस्वामी ने भी बात में लिखा है कि तप, त्याग, योग, वैराग्य का क्या करना है? **भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि वही सत्संग है।** वो आत्मीयता करना कितनी बड़ी बात है? **महाराज ने अंत्य. ११ का वचनामृत में भी वो बात बहुत अच्छी तरह से बताई है और वो हमारे जीवन में दृढ़ कराने के लिए आज गुरुजी हर एक के पीछे लगे हैं... ऐसे हमारे 'आत्मीयभाव' के लिए ये गुरुजी ने जो उठाव लिया है, वो बहुत ही जरुरी है।**

हर एक समाज में – हम जहां रहते हैं, जहां सत्संग करते हैं, जहां भी सेवा करते हैं – वहां ये **'आत्मीयभाव'** जरुरी है। मुम्बई के सत्संग में तो पहले से ही आत्मीयभाव है ही। यहाँ तो पूरा नया समाज है, जिसको कुछ

मालूम ही नहीं है कि आत्मीयभाव क्या है ? एक-दूसरे के साथ कुटुंबभाव रखना क्या है ? वो सब कुछ मालूम ही नहीं है। फिर भी वो यहां जीते हैं। पर यह एक ऐसा तरीका है कि **– हमारा 'अहम्' जो कि हम कितना भी करेंगे, फिर भी नहीं टलेगा; मगर ऐसे आत्मीयभाव – कुटुंबभाव से ये ऑटोमेटिक टल जाएगा और पता भी नहीं चलेगा।** हमारा काम-क्रोध-मोह-लोभ वो सब दोष भी कब टल जाएगा – वो भी पता नहीं चलेगा। **मगर हमें यदि भक्तों के साथ जुड़ना है, तो उसमें अपनापन ('स्व' का भाव) छोड़ना है** और अपनापन ('स्व' का भाव) छोड़ेंगे तो ही जुड़ सकते हैं, नहीं तो जुड़ नहीं सकते हैं; नहीं तो ये गुरुजी के वचन का स्वीकार नहीं कर सकते। भक्तों को रिस्पेक्ट नहीं दे सकते। **अपनापन (अपना 'स्व') छोड़े बिना ऐसा रिस्पेक्ट नहीं दे सकते।** तो आज गुरुजी को हम सच्चे अर्थ में बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं और गुरुजी के चरणों में ये प्रार्थना करते हैं कि ऐसा कुटुंबभाव सारे समाज में बहुत अच्छी तरह से विकसित हो जाए **और... आप जैसे चाहते हैं ऐसा हो जाए।**

...जब कभी बात होती है, तो हम बोलेंगे कि **ऐसा कुटुंबभाव कैसे होएगा ?** ये तो हमारा मानता नहीं है – मुझे कोई पूछता नहीं है। इसी तरह से हम बोलते रहेंगे तो वो कुटुंबभाव होने वाला ही नहीं है। **पहले किसी को अंदर डूबना पड़ता है – मरना पड़ता है; तभी होता है।** गुरुजी को पूछना कभी कि शुरुआत में दिल्ली में क्या था ? और हम जो देख रहे हैं वो क्या है ?

कल ही बात कर रहे थे हम कि – ४० जने लेकर बम्बई से काकाजी आए थे और पंचायती धर्मशाला में कुछ शिविर रखी थी। वो ४० जनों को दिल्ली दर्शन करने जाना था। १०.३० बजे सभा खत्म हो गई; बाद में बोलते हैं – अभी इनको दिल्ली दर्शन कराने लेकर जाओ। हिम्मतभाई गुरुजी को बोलते हैं कि – *गुरुजी इनको बोल दो कि शाम को ५.३० बजे वापिस यहां आ जाएं।* तो गुरुजी ने पूछा – *क्यों ? क्या कोई वजह है ? आरती है ? कुछ है ? – जो बोलते हो ५.३० बजे आना है।* वे बोले कि – *अगर वो नहीं होंगे तो सभा में बैठेगा कौन ?* ऐसी परिस्थिति थी ! और... ऐसी परिस्थिति सिर्फ भक्तों के बारे थी ऐसा नहीं, फाइनेन्सीयली वगैरह सब ऐसा ही चलता था। फिर भी ऐसा कुटुंबभाव प्रगट करके सब कुटुंब को तैयार करना वो बहुत बड़ी बात है। हमारे ऊपर काकाजी का ये बहुत बड़ा आशीर्वाद है। और... तब ही ये हो सकता है। तो पहले तो **गुरुजी के चरणों में मेरी सबकी ओर से ये प्रार्थना है कि आप जो ऐसा कुटुंबभाव चाहते हैं, ऐसा कुटुंबभाव जब काकाजी का मैत्री मिलन महोत्सव आ रहा है तब तक में दृढ़ हो जाए और आपके अंतर में ऐसा हो जाए कि – नहीं, ऐसा कुटुंबभाव हो गया है और अंतर में हाश हो जाए।**

दूसरा, गुरुजी जो भी कार्य करते हैं वो कुछ नवीन करते हैं और स्पेशियल करते हैं। हमको याद रह जाए ऐसा करते हैं और वो परफॅक्ट होता है। उसमें कुछ इधर-उधर नहीं होता है। इधर एक मूर्ति बनाई है – वो देखो और इस बार का कार्ड देखो। सब में कुछ विशिष्टता होती है और वो पर्मेनन्ट होता है। वो सामान्य नहीं होता है। ऐसे ही रोड का नाम देखो, स्टॅम्प देखो, फिर वो मूर्तियां देखो। सब काम पर्मेनन्ट करना और ठीक करना।

दो साल पहले हमने गुरुजी को बोला है कि हमें एक थोड़ी हिन्दी करवानी है। उसके पीछे भावना यह थी कि काकाजी ने लिखा है और उसका हिन्दी करना है; तो जो समझे हैं, वो ही हिन्दी करें, तो अच्छा होगा। गुरुजी मुझे लास्ट एक साल से बोलते हैं कि अभी दो चार पेज बाकी हैं, बाकी सब हो गया है। कहने का मतलब

कि उनकी भावना यह है कि वो अच्छा से अच्छा बने। पर, इधर का जो कारोबार है, उसमें कोई भी प्रॉब्लम आता है न – तो सब के सब उसमें जुड़ जाते हैं। परछाई का ऑप्रेशन हुआ – उसमें पूरा स्टाफ लग गया। वो एक आत्मीयता है – कुटुंबभाव है कि इसको तकलीफ है – तो पहले उसमें जुड़ जाओ – उसके लिए भजन करो – उसको उसमें से बाहर निकालो। बीच में ये बहन 'गौरी' – उसका भी ऐसा आया; फिर बीच में और कोई प्रॉब्लम था। कुछ न कुछ चलता ही रहता है। पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा का उत्सव वगैरह सब चला; तो गुरुजी बोलते हैं कि उसमें ये बाकी रह जाता है, मगर अभी कर दूंगा। कहने का मतलब क्या कि **गुरुजी को सब परफॅक्ट चाहिए। उनको कुछ भी ऐसा-वैसा चलेगा नहीं।** मुझे मालूम है १९७५ में मैं यहां आया था, तब एक बढ़ई एक पटरा या कुछ बनाकर लाया था। तो गुरुजी ने उसको वापिस भेज दिया था कि ये नहीं चलेगा! उनको ज़रा भी १९-२० नहीं चलता है।

ऐसा परफॅक्शन सामान्य चीजों में वो रखते हैं, **तो हमारे चैतन्य को तैयार करने में तो वे ज़रा भी चलाएंगे नहीं।** हम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि हम उनके साथ जुड़े हैं जो **हमारी कोई भी कसर नहीं रहने देंगे, इस बात की पूरी खातरी है; क्योंकि – गुरुजी को ऐसा-वैसा चलता ही नहीं। गुरुजी** को भी हम प्रार्थना करते हैं कि **आप कभी हिचकना मत और हमारे ऊपर ऐसी कभी दया लाना मत; मगर परफॅक्ट करके ही छोड़ना।**

आज मुझे ये तीन बात कहनी थी। गुरुजी की ये विशिष्टता है; वो भजनीक हैं – माहात्म्य है – वो सब बात तो है ही; मगर ये प्रार्थना करता हूँ। काकाजी का ये उत्सव मनाना है, तो नाम पूछने का हुआ। तो, गुरुजी ने तुरंत ही कुटुंबमेळा (कुटुंबमेळावडो) और ऐसा कुछ नाम बोला। ऐसा कुटुंबभाव जो यहां रहते फेमिलीज़ में हैं, वहां – बम्बई में – गुजरात में जो भी जहां भी रहते हैं, वहां ऐसे कुटुंबभाव से एक-दूसरे का माहात्म्य समझ कर, हम एक-दूसरे के पूरक बनें, एक-दूसरे के सहायक बनें, एक-दूसरे के आत्मीय बनें – सुहृद् बनें – ऐसा बनाने के लिए गुरुजी ये कर रहे हैं।

...**मल्कानी साहब** भी ऐसे आत्मीयता से पूरे गुणातीत समाज से जुड़े हुए हैं। अभी इधर आए तब मल्कानी साहेब को देखा कि एक-एक को मिल कर वे इधर आए। सब भक्त इसी तरह से गुरुजी से जुड़े हैं और सब सिर देने के लिए तैयार हैं। गुरुजी को भी ऐसा कुछ कहने में हिचक नहीं है। तो उनके अंतर में हाश हो जाए, ऐसा हमारा विचार-वाणी-वर्तन बना रहे – यही आज सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है।

प.पू. गुरुजी

...भरतभाई की बातें सुनकर मुझे बड़ी मजा आ गई। अब चार पेज भी बाकी नहीं है, कम्पलीट हो चुकी है; लेकिन एक बार मुझे देख लेनी है ताकि कोई गलती न रह जाए। काकाजी की **'रियल इसेन्स ऑफ तान्त्र'** में **'मंत्रशक्ति'** चैप्टर है, उसका हिन्दी ट्रान्सलेशन हो रहा है। तैयार हो गया है – सब कुछ है, पर कहीं ना कहीं अटक जाता है। फाईनल ही देखना बाकी है। महाराज की जयंती तक तो जरुर हो जाना चाहिए, यदि कोई प्रॉब्लम ना आया तो।

भरतभाई ने ये जो बातें करी वो एकदम सही हैं। मुझे भी दो दिन पहले का प्रसंग याद आ गया। मैंने नक्षु के लिए वी.के. अग्रवाल को चश्मा बनाने के लिए बोला था। वो जब भी आता है, मेरा चश्मा खींचता है; तो मैंने

सोचा कि इसके लिए ही एक बनवा दें, ताकि मेरा तोड़े नहीं। इसके लिए तो खूब छोटा बनाना पड़े। वी.के. कहते हैं कि – चार बार तो ग्लास टूट गए, सारा दिन उसमें चला गया। लेकिन मैंने वो पुष्कर को बोला कि थोड़ा भी १९-२० होगा, तो आधे घण्टे में चश्मा वापिस आ जायेगा। उसने पूछा भी कि गुरुजी का ऑर्डर है क्या? मतलब, भरतभाई की बात तो एकदम सही है। गुणातीतानंदस्वामी की बातों में तो एक बात है कि 'सब कुछ बराबर चाहिए, वो भी खुद खड़ी करी हुई एक पीड़ा है'। पर, मुझे हर चीज एकदम परफॅक्ट चाहिए। और… वो कभी भी हो नहीं सकता; इसीलिए मैं दुःखी रहता हूँ कि – ये बराबर नहीं हुआ, वो बराबर नहीं हुआ…

आज घर-घर के बैठे हैं, सो थोड़ी खट्टी - थोड़ी कड़वी बात करनी है, जो काफी टाइम से लॉंग पेन्डींग प्रॉब्लम था और… जो बात ये एरु वाले कौशिक ने छेड़ी। **कल तो 'हाऊसो, जाऊसो' से जनरल सभा में सिर्फ आनंद करना है।** आपने भी देखा कि बीच में बिठाने बारे* शुरुआत में यहां थोड़ी खींचातानी (तकरार) हुई।

ये दासभाव की या ऐसी कोई बात नहीं है; हक़ीक़त जो है, मैं आज समझा देता हूँ और यक़ीन करता हूँ कि आपके भेजे में उतर जाएगा। तब हम ए-१०३ में रहते थे, पर यह ए-१०३ की बात नहीं है; ये बात सांकरदा की है। मैं सांकरदा था और वहाँ काकाजी आते थे। रूम में मैं और काकाजी बैठे थे और… कुछ बात चली; काकाजी से मेरी कुछ बहस हुई। तो **काकाजी एकदम बोले – 'एक बात समझ कर रखना; ये हरिप्रसाद और अक्षरविहारी दोनों तुम्हारे गवर्नर्स हैं।** तमे गमे एटला 'मावजीभाई' थई जाव, लेकिन भूलना नहीं कि ये दो तुम्हारे गवर्नर्स हैं।' तो जहां कोई गवर्नर आया हो, वहां कलॅक्टर बीच में कैसे बैठेगा? ये नहीं होते हैं, तो मैं आप में से किसी को बैठने नहीं देता हूँ। मैं ही बैठता हूँ ना?

इससे भी आगे एक बात बताता हूँ – जो कि यहां दूसरा स्टॅंडिंग प्रॉब्लम है। कई बोलते हैं न कि यहाँ गुरुजी की मूर्ति कहीं है ही नहीं। यही प्रॉब्लॅम यहां दिल्ली वालों की है। ये बात शायद मैंने साहेब को करी थी। शुरुआत में अपने यहां चलता रहता था कि ये बड़े – ये छोटे, ये मुक्त – ये स्वरूप वगैरह-वगैरह। एक बार काकाजी के साथ मेरा इस बारे डिस्कशन हुआ था। मैंने उन्हें पूछा था कि – ***'मुक्त' में और 'स्वरूप' में क्या फर्क है?*** **काकाजी ने एक लाइन में जवाब दे दिया था –**

सीधी के आडकतरी रीते के चालाकी से अपने में जोड़े वो 'मुक्त' और महाराज में जोड़े वो 'स्वरुप'!

…फिर उसमें से कथा चली-चली-चली। उसमें वो स्वामी की एक बात❋ भी बोले कि यह मचकूर कोई समझा ही नहीं है। **स्वामी की यह बात में** कितना **स्पष्ट लिखा है कि भगवान ने जिस समय जिसके द्वारा कल्याण करना पक्का किया हो, उससे वो होता है। इससे कोई बड़ा या कोई छोटा नहीं हो जाता।** फिर बोले – कितना स्ट्राईकींग एक्ज़ाम्पल दिया है – परीक्षित का! शुकदेवजी द्वारा उसका कल्याण भगवान ने निश्चित करा था, तो व्यासजी जैसे बड़े थे; तब भी कल्याण शुकदेवजी द्वारा कराया। इससे व्यासजी छोटे हो गए ऐसा नहीं है। इसी तरह यहां है कि महाराज ने निश्चित करा हो कि तेरे द्वारा किसी के चैतन्य का विकास हो और तू समझे कि मैं 'मावजीभाई' हो गया, तो क्या 'मैं' और 'पप्पा' छोटे हो जाएंगे? फिर आगे बोले कि देख, यह बात – यह डिसीप्लिन कोई समझे या ना समझे, पर तू तो समझ।

---

* स्टेज पर बीच में बैठने ना तो प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी तैयार थे, ना ही प.पू. साहेबजी।

❋ प्र.४-४९.

आपको याद होगा – काकाजी ने प.पू. स्वामिजी की एक जयंती पर आणंद में अंग्रेजी में खूब मार्मिक प्रवचन करा था। मुझे तब ऐसा हुआ कि आणंद में और... स्वामिजी की जयंती का प्रसंग – जहाँ गांव के लोग ज्यादा होते हैं, वहां अंग्रेजी में कितने लोग समझे होंगे? और काकाजी ने बात भी बड़ी रहस्य की करी थी। तो फिर, रात को मैंने काकाजी को बोला कि – काकाजी आपने जो ये बात करी, कितने समझे होंगे? उन्होंने एकदम पूछा – तुम समझे थे? मैंने कहा – 'हाँ', मुझे तो अंग्रेजी समझ में आती है। तो बोले – बस! यह बात तुम्हारे लिए करी थी। मतलब, जनरल समाज के लिए ये बात थी ही नहीं! फिर इसी चॅप्टर पर बातें करते हुए आगे कहते हैं कि और कोई समझे या न समझे; ये बात तू समझ कर रखना कि अगर मेरे या पप्पाजी की लाईन में (हरोळमां) मैं तेरा फोटो देखूँ, तो मैं खुद फाड़ दूँ!

अब आप ही मुझे बताओ कि जब हम कहते हैं कि काकाजी और पप्पाजी तो गए ही नहीं हैं। सो, जब वे स्थूल रूप में थे और जो डिसीप्लिन रखनी थी, वो अब भी रखनी ही है ना? इसलिये ये फोटो वाली बात भी कोई 'दासत्व' नहीं है; पर ये डर बैठा हुआ है कि इनको पसंद नहीं है – खाट खड़ी कर देंगे अगर नहीं समझेंगे तो।

कल के लिए ये कौशिक ने बात करी है, पर पहले ही आशीष को बुला करके मैंने कहा हुआ है। क्योंकि – हर टाइम पर सभा में मुझे कहना पड़ता है कि स्वामी आप बीच में बैठो, और... फिर स्वामिजी के लिए सोफा बदलो – करो...

एक ऑर्डिनरी बात करता हूँ। काकाजी की स्टॅम्प का फंक्शन था और मिनिस्टर आने वाले थे। तो, उस तरीके का सब सॅटिंग हो रहा था। वहाँ से ऑफिसर्स पुछवा रहे थे कि तुम्हारे स्टेज पर कैसा सॅटिंग होगा – वो हमें डायाग्राम बना के दिखा दो। हम लोग वहां गए थे। तो, उनका पी.ए. बोला कि मिनिस्टर साहेब बीच में बैठेंगे। हम जानते हैं कि हमारा फंक्शन होता है, तो स्वामिजी ही बीच में बैठते हैं। जयप्रकाशजी मेरे साथ थे। जयप्रकाशजी को ऐसा कि हमारे स्वामिजी बैठेंगे। मैंने इन्हें इशारे से कहा – अभी उसको 'हाँ' करने में क्या जाता है? ये समझते नहीं हैं कि जो मिनिस्टर आयेगा, वो ही बीच में बैठेगा नहीं। कोई मूर्ख होगा, वो ही बैठेगा। और हम लोगों ने देखा कि सारा सॅटिंग इन्होंने जैसे कहा वैसे ही किया था, पर मिनिस्टर बीच में बैठा ही नहीं। अब जब एक मिनिस्टर ऐसा समझ सकता है, तो हम नहीं समझेंगे कि हमें सॅटिंग कैसे करना है? तो मैंने कल ही आशीष को बोला हुआ है कि सॅटिंग ऐसा ही करना कि – बीच में अपने ठाकुरजी की मूर्ति है वो रहे। कल के फंक्शन में कैसा सॅटिंग होगा वो मैं आपको अभी बता देता हूँ। बीच में ठाकुरजी की मूर्ति होगी। दोनों साईड पर दोनों गवर्नर्स होंगे। फिर एक साईड पर साहेबजी होंगे और दूसरी साईड पर तुम्हारे गुरुजी बैठेंगे। बराबर! बाकी बातें मुझे तो पागलपन जैसा लगता है। कई बार कोई मुझे बेतुकी बात बताता है कि पप्पाजी कहते थे कि – 'जेना लगन होय, तेने ज घोड़े बेसवानुं होय'। अरे! सोचना, कल कलाम आने वाले थे। उन्होंने पूरी कोशिश भी करी कि चलो, नागपुर जाने का प्रोग्राम कैंसल करके मैं ये फंक्शन में चला जाऊं, पर वो हो नहीं पाया। मानो, वो आए होते तो आप उन्हें कहां बिठाते? क्या उन्हें कहते कि – आख़िर में? बीच में ही बिठाने होते हैं।

इसी तरह जब हरिप्रसादस्वामिजी हों, साहेब हों – जो बड़े हैं, वो बड़े हैं ही। ये कोई ऐसी बात नहीं कि वे अलग-अलग स्टेट्स के गवर्नर्स हैं। यह बात हम लोगों को समझ कर ही रखनी पड़ेगी कि कहां साहेब? कहां

स्वामिजी? मानो – योगीजी महाराज हाज़िर हों और काकाजी का प्राकट्य दिन मनाया जाए, तो क्या हम कहेंगे कि काकाजी बीच में बैठें? ऐसा बनेगा क्या कभी? वी कान्ट ईवन ड्रीम धेट। सो, इस बात की वास्तविकता समझें। सब घर - घर के यहाँ बैठे हैं। मुझे कहते हो न कि **यहां वाले खुश होंगे।** मैं तुम्हें दावे से कहता हूँ कि इन सबने ऐसा पीया हुआ है कि जो मैं कहता हूँ न – उसी तरह से जो सॅटिंग होगा, उसी में वो दिल से खुश होंगे। ऐसा भी नहीं कि मेरी बात रखने के लिए; क्योंकि दिल से **इनको भरोसा है कि गुरुजी शॅल नेवर – किसी कारण भी नेवर मिसगाईड अस। ये मेरी क्रेडिट है कि एक भरोसा बिठा पाया हूँ। मुझे भी समझ है कि आप लोग तो मेरे हेल्पिंग हॅन्ड्स हो, आप लोगों को मिसगाईड करके मुझे क्या मिलेगा?**

जो-जो बातें यहां करी हैं, वो बातें एकदम सही हैं। ये सारा यहां कुटुंबभाव पनपा हुआ है। मैं आज दोपहर को ही किसी को बात कर रहा था कि – हम इतने फंक्शन्स करते हैं; हमने कभी यहां रसीदें काटी नहीं हैं – कभी नहीं। मैंने हमेशा कहा हुआ है कि अपने घर में लड़की की शादी हो, तो क्या आप बाहर कहने जाओगे कि हमारी लड़की की शादी है, तो ज़रा ये रसीदें फाड़कर फण्ड इकट्ठा कर दो, ताकि ये शादी निपटा दें। अगर शॉर्टेज भी होगी, तो ऐसे रिश्तेदार होते हैं जो पहुंच जाते हैं और... सब सेट हो जाता है। इसी तरह हमारे फंक्शन्स में ये सारे भक्तों का कॉन्ट्रीब्यूशन अपने आप आता है।

हक़ीक़त यही है कि ऐसा जो सत्संग हम बढ़ाएंगे, वो एकदम स्टेबल रहेगा। **सभी भले यहां की बात करते हैं, पर ये कुटुंबभाव का सत्संग तो मैंने देखा है कि सोनाबा घिस गयी थी और ताड़देव से बोरीवली – कांदीवली तक ऐसा सत्संग कराने के लिए घूमती रहीं; भायखला जा करके थोक में सब्जियां लाती रहीं। यूं आत्मीयता का ये सारा सत्संग विकास को पाया है। और आप कहते हो कि यहां ऐसा सत्संग का विकास हुआ है! दरअसल हम वहां से ही सीख कर आए हुए हैं;** तो ऐसी बेहुदी बातें भी हम न करें। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.पू. साहेबजी

कौशिक ने जब बात करी, तो स्मृतिपट पर मुझे भी दो प्रसंग आ गए। उसमें भी गुरुजी ने बात करी – इसलिए मैंने सोचा वो मैं बोल ही दूं। **गुरुजी ने जो बात बताई है, उनके हृदय से निकली है और वो जो सिखा रहे हैं, वो बहुत-बहुत इम्पॉर्टन्ट बात है।** जिन गुणातीत स्वरूपों को वो मानते हैं, उन संतों के प्रति उन्हें पूज्यभाव है। हमारा उनसे अतिशय प्रेम है... मैं योगीजी महाराज के साथ में था; काकाजी की ऐसी पहचान नहीं थी। तब 'हरिप्रसादस्वामिजी' प्रभुदास के रूप में थे और उनके प्रति भाव था। लेकिन **एक दिन रात को योगीजी महाराज ने आणंद के मंदिर में काकाजी को बुलाकर उनके हाथ में मेरा हाथ रख दिया और काकाजी को सौंपते हुए बोले कि – 'इस युवक को आप संभालना'।** उस समय मुझे योगीजी महाराज के प्रति जो भाव था, प्रेम था वही प्रेम और भाव योगीजी महाराज की कृपा से काकाजी के प्रति भी हो गया। फिर, काकाजी के साथ छात्रालय के काम में जुड़े हुए थे। तो जहां काकाजी बैठते थे, वहां हम भी जाते थे। गोंडल में एक बार शरद्पूनम का उत्सव मना रहे थे। पप्पाजी का तो मैंने दर्शन नहीं किया था। उस समैये पर पप्पाजी योगीजी महाराज के साथ बॉम्बे से प्लेन में आए थे। नया गेस्ट हाउस बना था, वहां पर काकाजी के

साथ हम बैठे थे। एक ही सोफा था, दूसरी चेयर थी। पप्पाजी आए तो काकाजी खड़े हो गए। आओ, आप बैठो-बैठो-बैठो; पर पप्पाजी नीचे बैठ गए – जमीन पर बैठ गए। काकाजी बोले – नहीं, आप बड़े भाई हो; आप ऊपर बैठो। मैं वहां ही था; तो पप्पाजी ने जो बोला कि – बलरामजी भी बड़े थे। क्या बोले? बलरामजी भी बड़े थे। **इनके ये बोलने से मेरे भीतर में पप्पाजी के प्रति उसी सेकन्ड इतना भाव प्रकट हो गया कि बड़े होकर भी काकाजी के साथ इतना भाव रखते हैं! तब से मुझे पप्पाजी के प्रति भाव है।** ये **गुरु का मौन उपदेश हो जाता है।** पप्पाजी बोलते नहीं, उनकी जो एक्शन है वो हमारे भीतर में क्लीक करती है। याद रखो, फोटोग्राफर ५-१० मिनट खड़ा नहीं रखता; एक ही सेकन्ड में क्लीक हो जाए और... फोटो पड़ जाता है।

हमको मालूम नहीं था कि संस्था में खड़बड़ाहट होगी और पप्पाजी के साथ रहने का होगा। उस टाइम वो सोच भी नहीं थी। लेकिन जैसे निर्मित था, बापा ने काकाजी के साथ जोड़ दिया और पप्पाजी के संवाद से इतना ही भाव पप्पाजी के प्रति उसी क्षण से हो गया।

जब भाव होता है, तो विक्ति नहीं होती है। प्रेम होता है, तो कम्पेरिज़न नहीं होती है। उनके प्रति भाव मीन्स भाव, प्रेम मीन्स प्रेम। तो, उनके साथ – पप्पाजी के साथ रहने में जो आनंद आया, वो स्मृति मुझे हो गई। **नीचे बैठने से पप्पाजी छोटे तो नहीं हो गए। हमारे लिए जो करना था, वो उन्होंने कर दिया।**

ऐसे एक दूसरा इन्सीडेन्ट हुआ। योगीजी महाराज छात्रालय का प्लीन्थ का काम देखने के लिए विद्यानगर आ रहे थे। दो दिन पहले गोरधनदास कॉन्ट्राक्टर से मीटिंग हुई कि बापा आने वाले हैं और सबको बुलाना है। तो गोरधनदास ने मुझे बताया कि चराडवा के महंत गोपालचरणदासजी 'नरनारायण देव' की गादी के बहुत प्रभावशाली संत हैं। गोरधनदास उनको भी मानते थे, तो बोले मैं गोपालचरणदासजी को लेकर आऊंगा। सूर्य-चन्द्र इकट्ठे नहीं होते, लेकिन आज सूर्य और चन्द्र को इकट्ठा करना है। सूर्य - चन्द्र को इकट्ठे करने का मतलब कि ये गादी वाले योगीजी महाराज के पास नहीं आते, लेकिन कल हम ले आयेंगे – छात्रालय की भूमि पर। तो हम तैयारी कर रहे थे। बापा आने वाले थे। शांतिभाई, अश्विनभाई हम सब ने गादी बनाई। योगीजी महाराज की गादी बड़ी बनाई और गोपालचरणदासजी की गादी थोड़ी छोटी - नीची बनाई। फिर बापा आए; सब आ गए। गोपालचरणदासजी को लेकर गोरधनदास कॉन्ट्राक्टर आए; तो योगीजी महाराज खड़े हो गए। अपनी गद्दी पर उनको बैठा दिया और खुद नीचे बैठ गए। तब मैं मेरी अज्ञानता से इतना बोझिल हो गया कि मेरी आँख में से आंसू आ गये। हमारी अज्ञानता के कारण योगीजी महाराज नीचे बैठ गए। मुझे समझना चाहिए कि **आसन से बड़े - छोटे नहीं हो सकते। हृदय के भीतर जो स्थान है, वही सच्चा स्थान है।** तब से निर्णय किया कि छोटे - बड़े आसन की ऐसी विक्ति में कभी नहीं जाएंगे। ये **गुरु अपने एक्शन से – अपने बर्ताव से हमें आध्यात्मिकता में आगे ले रहे हैं।**

अक्षरविहारीस्वामिजी को भी बीच में बैठना अच्छा नहीं लगता। इनका मुँह देखो – आप दर्शन करो। लेकिन, **गुरुजी का जो दासत्व है। काकाजी ने उनको जो आज्ञा की है उसे वे हार्टीली फॉलो करते हैं। उनके हर एक एक्शन बाई हार्ट माहात्म्य से भरी हुई है। उनके एक्शन से हमें सीखना चाहिए।** अपने साथीदारों को – अपने साथ काम करने वालों को इतना रिस्पेक्ट से – इतना भाव से उनको मिलते हैं, तो **हम**

हमारे साथ जो काम करते हैं – हमारे जो साथीदार हैं, उनके साथ हम ऐसा बर्ताव करें – वो गुरु के प्रति हमारे भाव का दर्शन है। आपस-आपस में मिलजुल कर ये जीवन जीना – वो साधु के साथ बैठने से, उनकी बातों से - उनके बर्ताव से - हमारे भीतर ये आ जाता है। **गुरुजी के प्रागट्य पर्व पर ये शाम की सभा बहुत अच्छी रही, आनंद आया।** भरतभाई ने भी अच्छी बात बताई कि – ये 'कुटुंबभाव' – जो स्वामिनारायण भगवान ने बताया वो शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी बढ़ा रहे हैं। **जो जहाँ भी है, वहाँ वो स्थान में रह कर भक्ति करो। गुजरात वाले को दिल्ली नहीं आना, दिल्ली वाले को गुजरात नहीं आना; जो जहां हैं, वहां रहकर भक्ति करें; लेकिन एक दूसरे के पूरक बनो...**

हमारे इष्टदेव को प्रगटाना है, हमारे इष्टदेव की प्रसन्नता प्राप्त करनी है। प्रसन्नता कैसे प्राप्त करें ? वो ऐसी बातों से हम सीखते हैं। इधर जो कुटुंबभाव है, वो माहात्म्य बढ़ता जा रहा है। कल मैं वालियाजी के घर था, फिर फरीदाबाद गया – नासाजी मिले; गुरुजी के साथ रहने से उनके भीतर में – पूरे फेमिली में माहात्म्य आ गया है। विजयपाल के घर रहे, तो ये माहात्म्य का दर्शन हुआ। वो गुरु की प्रसन्नता से, गुरु के साथ जुड़ने से, गुरु के साथ बैठने से, उनकी सेवा करने से, उनके प्रेम से हमारे भीतर आता है।

आज फर्स्ट टाईम मुझे **'अक्षरज्योति'** का दर्शन हुआ। गुरुजी, रियली बहुत-बहुत अभिनन्दन – कॉन्ग्रेच्युलेशन, बहुत-बहुत अच्छा बनाया है। आनंदी दीदी और सब बहनों ने पूरा बिल्डिंग का हमको टूर करवाया – दर्शन करवाया; हॉल बहुत अच्छा, नीट एण्ड क्लीन। मूर्तियाँ भी अच्छी; उनके भीतर जो भाव है, उनका भी बहुत अच्छी तरह से बहनों ने दर्शन करवाया। इतने भाव से, इतनी सहजता से, इतनी सरलता से उन्होंने दर्शन करवा कर पूरी बातें बताईं। बहुत प्रेम से – बहुत अच्छी तरह से बहन लोग वहाँ भक्ति कर रहे हैं। कैसे हो सकता है यह ? ये गुरुजी की प्रसन्नता, काकाजी की प्रसन्नता, पप्पाजी की प्रसन्नता का उन्नत दर्शन है। कितने भाव से – कितनी अच्छी तरह से ? और... युवान लड़कियाँ हैं ये ! समाज की कुछ झंझट से – कोई तकलीफ में आकर भगवान के मार्ग पर चलने नहीं निकले; लेकिन पूर्व की मुक्त होंगी, सो काकाजी और गुरुजी के संकल्प से वो भगवान भजने के लिए आईं। **आनंदी दीदी के सान्निध्य में ज्योति बहन, हंसा दीदी सब बहनों की गाइडेन्स मिली, बा का आशीर्वाद मिला – पप्पाजी का (आशीर्वाद) तो बहुत।** रहने का बहुत अच्छा बना, वो उनकी कृपा से हुआ है...

एक बात मैं दूसरी करूँ कि – उनके संकल्प से – याद रखो ये हो रहा है। पहले के पुराने टाईम में जो तकलीफ थी, वो तकलीफ आज नहीं रही है। इसके भीतर उनका संकल्प है, उनकी तपस्या है, उनका हमारे ऊपर प्रभाव है, उनकी हमारे ऊपर कृपा है। तब आज इतनी अच्छी तरह से भगवान भजने का, अच्छी तरह से रहने का, अच्छी तरह से ये करने का मौका मिला। सबने बताया कि पहले कैसा था इधर ? दादुकाका बोलते थे – 'वो दिन याद करो, वो दिन याद करो'। पर, ये पूर्णाहुति नहीं है। **खाना-पीना, अच्छी तरह रहना वो कोई सिद्धि नहीं है; लेकिन काकाजी बोलते कि अधिक से अधिक प्रभु में रहकर, प्रभु का होकर काम करना – वही हमारी जिम्मेदारी है। अधिक से अधिक प्रभु में रहना, अधिक से अधिक प्रभु का माहात्म्य प्रसारना, अधिक से अधिक अरस-परस सुहृद्‌भाव, एकता, संगठनभाव बढ़ता जाए – वही हमारी उनके प्रति भक्ति है। बाह्य जो तकलीफ थी, वो निकल गई। अब सूक्ष्म की तपस्या है।** पहले

स्थूल देह की तपस्या थी; पर गुरुदेव की कृपा से – स्वामिनारायण भगवान की कृपा से वो कम हो गई है। **एक दूसरे का जो भी हो – उसके प्रति निर्दोषभाव, दिव्यभाव रखकर उनके प्रति नमते (झुकते) रहो, खमते (सहते) रहो और उनका गुणगान – माहात्म्य गाकर प्रभु की प्रसन्नता के पात्र बनते रहो। ऐसी साधना करने का हमको मौका मिला है।** ये अक्षरधाम में बिठा दिया, वो उनकी कृपा है। अब अक्षरधाम में रहकर हम उसका पूरा आनंद लें, ऐसा हमारा आंतरिक जीवन बन जाए – ऐसी कृपा बरसाएं – ऐसी गुरुजी के प्रागट्य पर्व की हम सबकी ओर से प्रार्थना।

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

शेष अगले अंक में...

✡✡✡

'ताड़देव की गतिविधियाँ'

'मई' के महीने की आहट दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मुंबई, अमदावाद के मुक्तों को विशेष रूप से जाग्रत कर देती है। पिछले करीब पन्द्रह-सत्रह साल से स्कूलों में गर्मी की छुट्टियों होने के कारण **'रिफ्रेशर्स कोर्स'** के रूप में **'अनुष्ठान शिविर'** का आयोजन हो रहा है... शुरुआत में प.पू. गुरुजी को लगता था कि एक महीने की इस शिविर में नौकरी, व्यापार आदि में जुड़े मुक्त शायद अधिक नहीं आ पाएंगे। परंतु आश्चर्य की बात यह है कि शिविर में सिर्फ एक बार भी जो आया है, उसे चस्का लग जाता और... हर साल राह देख कर वह उसकी तारीख पूछने सामने से फोन करता है... हर साल की भांति इस बार भी **१५ मई से १२ जून – ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रागट्य दिन तक 'अनुष्ठान शिविर' का आयोजन किया गया।**

पिछले वर्ष की भांति ही प.पू. गुरुजी की तबियत का ख्याल रखते हुए शिविर सुबह की ना रख कर सायं ७:०० से ९:०० की ही रखी गई...

१५ मई की सायं को करीब सवा छः बजे सारे मुक्त ताड़देव के प्रांगण में बाहर – जहाँ प.पू. गुरुजी की बैठक बनाई है, वहाँ नीम के वृक्ष के नीचे इकट्ठे हो गए...

यूं **एक महीने तक रोज २००-२२५ हरिभक्त ठीक सात बजे इकट्ठे हो जाते। मॅट्रो सिटी और वो भी देश की राजधानी में इतने व्यक्तियों का रोज दो घंटे-ढाई घंटे भजन, कथावार्ता निमित्त इकट्ठे होना, वो भगवान प्रगटाई हुई विभूति द्वारा ही कराना संभव है।** अबकी बार प्रकृति भी मानो पुण्य एकत्रित करने में कहो या अपनी भक्ति अदा करने में पीछे नहीं रही... पूरा महीना मौसम अच्छा ही रहा... मई के महीने में पाँच-छः बार तो बरसात भी हो गई!

उद्‌घाटन होने से पूर्व ही प.पू. गुरुजी ने मानो इस एक महीने का सार निम्न प्रकार बताया कि –

*'जो कर्मकाण्ड करते होंगे उन्हें 'पुरश्चरण' कराने – 'अनुष्ठान' कराने के बारे में पता होगा। कोई संकल्प की पूर्ति के लिए विशिष्ट पूजा, मंत्र जाप जो करते हैं उसको कहते हैं **'अनुष्ठान' – 'पुरश्चरण'**। तो यहाँ डेईली चालीस मिनिट 'स्वामिनारायण महामंत्र' – लिवींग मंत्र जिसको हम कहते हैं उसका पुरश्चरण करेंगे।*

ऐसी एक भावना से अगर रॅग्युलर करेंगे, तो हमारे शुभ संकल्प – सत्य संकल्प ये एक महीने के पुरश्चरण के फलस्वरूप महाराज जरुर सिद्ध करेंगे। *पर 'पुरश्चरण' एक भावना और रेग्युलारिटी से करना होता है; ऐसा नहीं कि बीच में उठ गए, कल नहीं करा, परसों आए नहीं – ऐसा नहीं चलता। इसमें एक नियम कह दो – पंक्चुयालिटी होती है। दूसरी बात, जैसे मैं हर साल कहता हूँ–*

'काकाजी की टेप सुन कर सारे साल का एक

रिफ्रेशर्स कोर्स मिल जायेगा। इस साल हम जिस तरीके से चले, अब उसमें क्या स्पीड बढ़ानी है या क्या ध्यान रखना है या जो गल्तियाँ हम कर गए, वो कैसे रिपीट ना हो उसका ध्यान रखना है...'

पू. मल्कानी अंकल एवं विशेष रूप से इस शिविर हेतु ही मुंबई से आए सौ. शोभना भाभी के भाई **प.भ. श्रेयसभाई** ने दीप प्रज्ज्वलित करके शिविर का उद्घाटन किया।

अबकी बार इस दिन स्मृति रूप एक नवीन जेस्चर प.पू. गुरुजी ने किया... सभी संतों, बहनों, हरिभक्त भाई–भाभियों को महापूजा की प्रसादी का कलावा बंधवाया और वह कलावा १२ जून यानि – 'ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रागट्य दिन' एवं 'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति तक बांधे रखने की आज्ञा करी और उन्होंने – स्वयं भी बांधे रखा!

इनके इस जॅस्चर के मर्म को समझें, तो एक महीने तक सभी को हर पल सचेत रखने के लिए ये था। मानो इस महीने दौरान हम मन-स्वभाव के चक्कर में यदि अपने निशान से चूक कर गलती कर रहे हों, तो यह याद दिलाता कि प.पू. गुरुजी ने तो हम से क्या अपेक्षा रखी है? शिविर के प्रथम तीन दिन ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की परावाणी का एवं बाद में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की परावाणी का लाभ सभी ने लिया। प्रवचन गुजराती में होने के कारण हिन्दीभाषी मुक्तों को समझाने हेतु प.पू. गुरुजी ने एक-एक वाक्य का खूब विस्तार से निरूपण करके प्रभु के मार्ग पर आसानी से चलने बारीक-बारीक मुद्दे बताए। आईए, 'श्रवण, मनन, निदिध्यासन' स्तंभ के अंतर्गत वे पढ़ें और आचरण में लाने तत्पर हों...

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

* **स्वामिनारायण संप्रदाय की** सबसे बड़ी विशेषता यह कि **परम चेतना की मानवस्वरूप में 'कन्टीन्युईटी' रही।** सवा दो सौ साल से महाराज और स्वामी प्रगटे। उसके बाद वह परंपरा चालू रही।

  ध्यान में रखें कि **पप्पाजी ने अपने आशीवर्चन में गुणातीत के बाद भगतजी, जागास्वामी और अदा बताए; एक का ही नाम नहीं लिया। बहुत टेक्नीकल – सिद्धान्तिक चीज है यह। स्वरूप एक ही हो ऐसा नहीं है।** हाँ, सौ दो-सौ भी नहीं हो सकते। जैसे शेरनी का दूध स्वर्ण पात्र में ही टिकता है यूं बहुत कम होते हैं ऐसे पात्र! **कन्टीन्युईटी रखनी – वो संत का सर्वोच्च सामर्थ्य है** कि अपने जैसे पात्र तैयार करके फिर वो जाए।

* सत्संगी की दृष्टि भी जिसके ऊपर पड़े, उसका कल्याण! और... हम खुद सोचते रहते हैं कि हाय-हाय हमारा क्या होगा? अरे! तुम्हारी दृष्टि पड़ेगी उसका कल्याण होगा।

* श्रीजी महाराज ने एक एड्वान्समेंट करी है। आज से पचास साल पहले कोई कह दे कि – भई, पानी को उबालने की कोई जरूरत नहीं है, सारे बैक्टीरिया वगैरह 'केन्ट' में निकले होते हैं; उसमें कहां उबालना करना पड़ता है? यह नई टेक्नॉलॉजी आ गई! वैसे **स्वामिनारायण ने स्पीरिच्युआलिटी में नई टॅक्नॉलॉजी दी, जो नई है इसलिए हमारे दिमाग में बैठती नहीं है।**

* **सत्संगी की दृष्टि पड़े उसका भी कल्याण! कितनी विशाल कल्याण योजना महाराज ने**

की।

संतों ने बापा को एक बार **पूछा** था कि – *बापा, ये सब बोलते हैं – पातंजल योग, भक्तियोग, राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग;* ***अपना कौन सा योग है?*** **बापा ने बोला – *'अड़फट योग'*! यानि – रास्ते में चलते हुए बीच में कुछ आ जाए,** गुजराती में इसे कहते हैं – 'अड़फट में'। हिन्दी में क्या बोलते हैं पता नहीं, पर टकरा जाए - जिसको बोलें; उसका भी कल्याण!

'...कोई कहेशे आ संत तो बहु सारा रे, खरा कल्याणना करनारा रे, एटलो ज गुण कोई लेशे रे; ते तो ब्रह्ममहोल जई पुगशे रे...'

देखो, ये पुरी साहब ए-१०३ के पास से गुजरे थे और सोचा कि ये संत लोग... ऐसा है। ये **स्वामिनारायण का जो फ्लक्स, उसके एट्रेक्टिंग पावर का हमें ख्याल नहीं है।** वे इन्द्रियाँ अंतःकरण को पार करके सीधे चेतना में चले जाते हैं। अपने को पता भी नहीं लगता! **स्वामिनारायण के साधु के रेईझ रॅडियोएक्टिव रेईझ की भांति हमें ख्याल भी न पड़े, वैसे चेतना में चले जाते हैं...** एकदम नया फिनोमिना है। पर, विश्वास रखना कि ये एकदम सच्ची बात है। तुम्हें अजमाना हो, तो अजमाओ।

* मौज दे दी। क्या साधन करा? कुछ नहीं। और... वो भी सामान्य कल्याण नहीं, आत्यंतिक कल्याण! आत्यंतिक कल्याण क्या? फिर जनम-मरण के चक्कर में आना ही ना पड़े – वो आत्यंतिक कल्याण। ...एक रहस्य की बात करूं? कईयों को ऐसा लगता है कि छोटे-मोटे संकल्प तो महाराज पूरे कर ही देते हैं, लेकिन हमारा यह एक काम नहीं करते... एक बात खूब समझ के रखना कि ये आत्यंतिक कल्याण का प्रोसेस है। **जिस वृत्ति के कारण ऐसा संकल्प – जो कि वो वृत्ति – मूल वृत्ति को एन्टरटेइन करते हुए तुम्हें जनम-मरण के चक्कर में डालती हो, वो महाराज पूरा नहीं होने देंगे।**

...एक मूल वृत्ति होती है। जैसे भरतजी की दया की वृत्ति! जगत को प्रशंसनीय भी लगे, लेकिन वो भी एक 'वृत्ति' ही तो थी। इसलिए बापा ने बोला था - उन्हें ऐसे कोई संत मिले होते, तो ख्याल देते कि बस! हिरणी की रक्षा हो गई, अब इसे छोड़ दे। देखो! राजपाट छोड़ा, स्त्री छोड़ी; सब कुछ छोड़ा – पर वृत्ति हिरणी में रह गई। सब कुछ छोड़ा था, तो क्या हिरणी के बच्चे में बंधने निकले थे? इसी तरह **हम जो भगवान भजने यहाँ आए, साधु हुए - सेवक हुए और फिर छोटे-छोटे स्वभावों के कारण साधु के सिवा कहीं इधर - उधर बंधे रहते हैं। यह महाराज बर्दाश्त नहीं करेंगे - चलने नहीं देंगे।** अपनी वो गाड़ी चलने ही नहीं देंगे; **वहाँ हमेशा ब्रेक लगी रहेगी।**

* लड़का नहीं हो - लड़का हो जाए, बीमारी हो - वह टल जाए, धंधा नहीं चलता हो - वह चलने लगे, नौकरी नहीं मिलती हो वह लग जाए... इसे हर एक अपने - अपने लेवल से 'कल्याण हो गया' – यूं मानेगा। लेकिन **जनम-मरण के चक्कर में से छुड़ा करके 'जीवन मुक्त' बना दे – वो आत्यंतिक कल्याण अलग चीज है। महाराज ने वो शुरुआत करी।**

* **प.पू. साहेब ने** बहुत अच्छी **बात करी थी** कि – ***अभी नज़र आता है कि बड़ी-बड़ी गाड़ियां हैं, ये है - वो है; लेकिन – हमारे गुरुओं ने जो सहा है, वो कभी भूलना नहीं।***

* **...सो ये परम्परा को कभी भूलें नहीं। बीच में से किसी को भी ड्रॅाप आउट नहीं करना। इन्होंने जो सहा हुआ है – जो प्लेटफार्म तैयार किया हुआ है, उसी पर हम सब 'तागड़ धिन्ना'**

करते हैं।

* महाराज का संकल्प योगीजी महाराज ने कार्यान्वित किया। **एक गुणातीत समाज – ब्रह्मनियंत्रित समाज! 'मानव' बुद्धि से नियंत्रित है और 'जानवर' सिर्फ वृत्ति के आधीन है; पर, एक नई एडवांसमेन्ट है – ब्रह्मनियंत्रित!** इसलिए कहते कि–

कोई भी घटना बनें,
हम अपनी सोच से तुरंत कोई एक्शन न लें।
हम अपनी वृत्ति में बह करके कोई एक्शन न लें।
हम अपनी लाइकिंग्स – डिस लाइकिंग्स में रह करके कोई एक्शन न लें।

काकाजी कहते थे – **'थोभो-थोभो-थोभो'।** महाराज ने उपायभूत थवा दो... वे काम करेंगे। **पप्पाजी बोलते** थे – **'स्टॉप धी एंजीन! लॅट हिम वर्क'।**

तब तक हम क्या करें? **तब तक** हम **स्वामिनारायण, स्वामिनारायण...' भजन करें।** फिर **वे हमें सूझ देंगे कि अब हमें क्या करना है?** ये सारी अजमाने जैसी चीजें हैं, लेकिन हम में वो **'स्वरूपलक्षी धीरज'** ही नहीं है।

* योगीजी महाराज और काकाजी जिन्हें हमें सौंप गए हैं, उन मुक्तों की सेवा करा करनी है।
* मुझे साधु नहीं होना था; पर, बापा कहते रहते थे कि – आपणे साधु थई जाओ; गुणातीत ने जिन २०० को ब्रह्मविद्या पढ़ाई थी, उनमें से तुम एक हो। मतलब, कम्पल्सरीली साधु होना ही पड़ेगा।

प.पू. साहेब की कॅटेगरी अलग है। वे तो ब्रह्मविद्या पढ़े हुए राहबरों के महारथी हैं – इनके लीडर हैं वो! मेरी तुलना उनके साथ कैसे हो सकती है?

* हम कभी ऐसे नहीं कह पाएंगे कि हम जो कर रहे हैं – वही सही है। जिसको जो काम करना है, वे वह करते रहते हैं। आज प्रमुखस्वामी महाराज विश्व में पांदड़े-पांदड़े (पत्ते-पत्ते पर) स्वामिनारायण का संदेशा फैलाने का काम – जो मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का संकल्प था – वो वे करते हैं।

स्पिरीच्युअल टेक्नीशियन्स तैयार करने और... एक ऐसा आध्यात्मिक समाज तैयार करना - जो महाराज की योजना थी – वो काकाजी ने शुरु करा... और हमें वो मिशन पर चलना है।

* पप्पाजी का कहने का मक़सद वही था कि – **सब मुक्त ब्रह्मनियंत्रित हैं और सब प्रगति करते चैतन्य हैं।** इसलिए कोई गलत कर रहा है ऐसा लगे, तो भजन करें।

बेशक, मैं तुम्हें आज ये सलाह देता हूँ, पर मैंने भी खूब मत्थापच्ची करी है और आख़िर में यह समझा है कि अब यही उपाय लेने जैसा है। सो, किसी की कोई बात हमें पसंद नहीं आती है, तो हम भजन करें – 'स्वामिनारायण... स्वामिनारायण...'। पर, वो गलत कर रहा है, यूं ना सोचें। मिरेक्युलेस्ली कोई नई घटना बन जाएगी।

* **'हार के कगार पर आई बाजी को जीत में पलटा दें – वो काकाजी।' अगर हम उनके साथ लगे रहेंगे तो हमारी जीत होगी ही।**

...काकाजी की ये कॅरेक्टरेस्टिक देख कर बापा ने इनको हर नए फिल्ड पर भेज दिया था। **विदेश में आज सब जाते - करते हैं, लेकिन सबसे पहले बापा ने काकाजी को अफ्रीका भेजा था; जब वहां कोई भी नहीं था – जिसे 'अंधार खण्ड' बोलते थे।**

* **प.पू. काकाजी के बारे** एक बार **पू. अश्विनभाई ने** बहुत अच्छी **बात बताई थी।**

'जब कोई किले में घुसना होता था, तो दरवाजे

के आगे पहले ऊँट रखा जाता था। वो दरवाजे की कीलें ऊँट को लगें–ऊँट मरे, बाद में उसके ऊपर से सब हाथी वगैरह अंदर घुसें–जैसे कि इन्होंने पहल करी; पर,पहल तो वो ऊँट ने की थी–जिसने कीलें खाई थीं और जो मर गया।'

✻ दिल्ली में काकाजी की सबसे बड़ी मेहरबानी ये रही कि पूरी फेमिली की फेमिली ही सत्संग से जुड़ी है।

✻ स्वरूप को हार वगैरह पहनाओ, वो तुम्हारे साथ फोटो खिंचवाने मुँह बना कर भी रखे–वो बात अलग है। लेकिन वो सच में इससे राजी हो जाए, तो समझना वो गुणातीत है ही नहीं। **गुणातीत स्वरूप को तो हार पहनना–मान स्वीकार करना कसनी लगती है।**

दरअसल, ये साधु का कर्तव्य है कि संबंध वाले हर एक को उसके ढंग से मूर्ति दिया करे; ताकि वो उसी मूर्ति को लेकर अपने माइंड को उसके साथ एंगेज रखे...

✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 2.8.2008, शनिवार — श्रावण महीना प्रारंभ

(2) दि. 12.8.2008, मंगलवार — पवित्रा एकादशी–व्रत
(ठाकुरजी को पवित्रा के हार पहनाने।)

(3) दि. 15.8.2008, शुक्रवार — भारत का स्वातंत्र्य दिन

(4) दि. 16.8.2008,शनिवार — श्रावणी पूर्णिमा–राखी
सुबह 8:00 से 10:00 प.पू. गुरुजी की निश्रा में सच्चा रक्षाकवच प्राप्त करने प्रार्थना करेंगे।

(5) दि. 21.8.2008, गुरुवार — नाग पंचमी

(6) दि. 22.8.2008, शुक्रवार — रांधण छठ (षष्ठी)

(7) दि. 23.8.2008, शनिवार — शीतला सातम (सप्तमी)

(8) दि. 24.8.2008, रविवार — जन्माष्टमी–व्रत

(9) दि. 27.8.2008, बुधवार — एकादशी–व्रत

(10) दि. 1.9.2008, सोमवार — **ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी का प्रागट्य दिन**

(11) दि. 3.9.2008, बुधवार — गणेश चतुर्थी

(12) दि. 11.9.2008, गुरुवार — जलझीलनी एकादशी

(13) दि. 12.9.2008, शुक्रवार — वामन जयंती

(14) दि. 14.9.2008, रविवार — अनंत चतुर्दशी

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052